मेरे बचपन की कहानियाँ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Mere Bachpan Ki Kahaniyan (Stories From My Childhood)
Cover Page picture : A Scene of Storytelling
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
मेरे बचपन की कहानियॉ 5
1 सारस और लोमड़ी की कहानी 7
2 आदमी और शेर 12
3 मुंशी जी की तनख्वाह ज़्यादा क्यों 19
4 गधा डूबा क्यों 24
5 खरगोश और शेर की कहानी 28
6 गीदड़ और शेर 35
7 कुत्ता और मॉस का टुकड़ा 39
8 मगर और बन्दर 41
9 कछुआ और खरगोश की दौड़ 47
11 दो बिल्लियॉ और बन्दर 55
13 एक शेर और एक छोटी चुहिया 62
14 एक लड़का और कुल्हाड़ी 68
15 एक लड़का और भेड़िया 73
16 तीन बेटियॉ 77
17 बॅदरिया दुलहनियॉ 85

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

मेरे बचपन की कहानियाँ

साधारणतया सभी बच्चे अपने अपने बचपन में कहानियाँ कहते सुनते हैं, चाहे वे अपने माता पिता से सुनें या फिर दोस्तों से और या फिर स्कूल में पढ़ें और या फिर किताबों में।

यहाँ हम कुछ ऐसी कहानियाँ दे रहे हैं जिनको सुन कर और पढ़ कर मैं बड़ी हुई। ये कहानियाँ मैंने कहीं से ली नहीं हैं ये सभी कहानियाँ मेरे बचपन मे सुनी हुई कहानियाँ हैं जो शायद मैंने **2–3** साल की उम्र से सुननी शुरू की होंगी।

इन कहानियों को पढ़ो और देखो कि हमारे देश के माता पिता **1940** के दशक में अपने बच्चों को कैसी कहानियाँ सुनाया करते थे। इनको पढ़ कर बताना कि क्या तुम भी ऐसी ही कुछ कहानियाँ पढ़ सुन कर बड़े हुए हो? मुझे पूरा विश्वास है कि तुम लोगों ने इनमें से कुछ कहानियाँ अवश्य ही सुनी या पढ़ी होंगी। हालाँकि इस नये समय में तुम लोगों की कहानियाँ ऐसी कहानियों से अवश्य ही अलग होनी चाहिये।

तो लो पढ़ो ये कुछ कहानियाँ मेरे बचपन की। ये सारी कहानियाँ मैंने तुम्हारे लिये अपनी याद से लिखी हैं जैसी कि हम सुनते थे। अगर कोई कहानी कहीं किसी किताब में भी तुमको मिल जाये तो यह वहाँ से नहीं ली गयी है। दूसरे अगर कोई कहानी इस पुस्तक में अलग तरह से दी हुई हो और तुम उसी कहानी को किसी अलग तरह से पढ़ या सुन रहे हो तो इसका मतलब यह है कि वह कहानी मैंने इसी तरह से सुनी थी जैसे मैंने इसमें लिखी हुई है।

आशा है कि अगर तुम ये कहानियाँ पढ़ोगे तो ये तुम सबको **75** साल पहले का माहौल बतायेंगी और अगर तुम इन्हें किसी बड़े से सुनोगे तो ये उनको **75** साल पहले की याद दिलायेंगीं।

1 सारस और लोमड़ी की कहानी

बच्चों यह सारस और लोमड़ी की कहानी बहुत पुरानी कहानी है पर है बड़ी मजेदार। हम इस कहानी को बचपन से कहते और सुनते चले आ रहे हैं।

मैं आज भी अपने पोती पोतों को यह कहानी इसलिये सुनाती हूँ ताकि वे घर में बुलाये गये मेहमान का दिल से स्वागत करें और उसकी सुख सुविधा का खयाल रखें।

एक बार की बात है कि एक नदी के किनारे एक सारस सुख से रहता था। जब तब वह नदी में घुस जाता और **2–4** मछलियाँ खा कर बाहर आ जाता और देर तक धूप में बैठा धूप सेकता रहता।

उसी नदी पर और भी जानवर पानी पीने आया करते थे। उन जानवरों में एक लोमड़ी भी थी। बच्चों लोमड़ी बहुत ही चालाक जानवर होता है। पर धीरे धीरे किसी तरह से सारस और लोमड़ी की दोस्ती हो गयी।

एक दिन लोमड़ी ने सोचा कि अपनी दोस्ती की खुशी में सारस और वह एक साथ खाना खायें तो कितना अच्छा रहे सो उसने सारस से कहा — "सारस भाई एक दिन हमारे घर खाना खाने आओ न।"

सारस यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "क्यों नहीं लोमड़ी बहिन। तुहारे साथ खाना खा कर मुझे बहुत अच्छा लगेगा। बोलो मैं कब आऊँ?"

लोमड़ी बोली — "कल ही आ जाओ न सारस भाई।"

सारस बोला — "ठीक है मैं कल ही आ जाता हूँ। कल मुझे और कोई काम नहीं है।"

अगले दिन सारस नदी में देर तक नहाया। उसने आज मछलियाँ भी नहीं खायीं क्योंकि आज तो उसको लोमड़ी बहिन के घर खाना खाने जाना था। साफ सुथरा और ताजा हो कर सारस लोमड़ी के घर चल दिया।

लोमड़ी तो सारस का इन्तजार ही कर रही थी। वह सारस को देखते ही बहुत खुश हुई और उसके पंखों पर हाथ रख कर उसे अन्दर ले गयी।

लोमड़ी ने खाना पहले से ही एक बड़ी सी पत्थर की मेज पर सजा रखा था ताकि सारस को इन्तजार न करना पड़े। सारस को भी भूख लगी थी सो वे दोनों खाना खाने बैठे।

एक सुन्दर से केले के पत्ते पर बहुत सारा हलवा रखा था। लोमड़ी बोली — "आओ सारस भाई हलवा खाओ। हलवा अभी भी गरम है मैंने अभी अभी बनाया है।"

हलवा देखने में वाकई बहुत सुन्दर लग रहा था। उसको देखते ही सारस के मुँह में पानी आने लगा।

तो बच्चो सारस की चोंच तो बहुत लम्बी होती है और हलवा था गरम सो जैसे ही सारस ने हलवा खाया तो पहली बात तो उसकी चोंच जल गयी। दूसरे उसकी चोंच में बहुत ही कम हलवा आया।

अब हलवा था तो बहुत बढ़िया परन्तु सारस अपनी लम्बी चोंच की वजह से उसे बहुत ही धीरे धीरे खा पा रहा था।

उधर लोमड़ी ने जल्दी जल्दी दो चार बार अपनी जीभ उस केले के पत्ते पर इधर उधर घुमायी और वह सारा हलवा जल्दी से चट कर गयी। सारस बेचारा हलवा ठीक से चख भी नहीं पाया था कि वह खत्म भी हो गया।

कुछ देर बाद सारस लोमड़ी को धन्यवाद दे कर दुखी हो कर अपने घर वापस आ गया। सारस और लोमड़ी फिर वहीं नदी के किनारे मिलते रहे परन्तु सारस लोमड़ी की दावत को नहीं भूला।

कुछ दिनों बाद सारस बोला — “लोमड़ी बहिन एक दिन तुम को भी मेरे हाथ का खाना खाना चाहिये। देखो कि मैं कितना स्वादिष्ट खाना बनाता हूँ। सो तुम भी आओ न एक दिन मेरे घर खाना खाने के लिये।”

लोमड़ी यह सुन कर बहुत खुश हुई और बोली — “सारस भाई यह तो मेरे लिए बहुत ही खुशी की बात होगी। बोलो कब आऊँ?”

सारस कुछ सोचते हुए बोला — “अगले इतवार को तो मुझे कुछ काम है क्यों न हम सोमवार की शाम को मिलें।”

लोमड़ी बोली — "ठीक है तो हम लोग अगले सोमवार की शाम को मिलते हैं।" और लोमड़ी खुशी खुशी घर चली गयी।

अगला सोमवार आया। शाम को लोमड़ी ने अपनी सबसे अच्छी पीली स्कर्ट निकाली और उसके ऊपर काला रेशम का ब्लाउज पहना। एक बड़ा सा टोप लगाया। अभी कुछ धूप थी तो काला चश्मा लगाया और पालिश किये हुए चमकदार जूते पहने।

शीशे में अपना चेहरा देखा और सज धज कर सारस के घर चल दी खाना खाने के लिये। चलते समय वह अपनी छड़ी लेना नहीं भूली।

सारस ने भी लोमड़ी के लिए खाने की पूरी तैयारी कर रखी थी। उसने तंग गरदन वाला यानी सुराही जैसा एक बरतन फर्श पर रखा हुआ था।

सारस ने लोमड़ी का प्रेम से स्वागत किया और दोनों उस सुराही के पास आ कर बैठ गये। सारस ने लोमड़ी के आने की खुशी में आज मीठे चावल बनाये थे और उनकी सोंधी सोंधी खुशबू लोमड़ी के नथुनों तक पहुँच रही थी। लोमड़ी उन चावलों को खाने के लिए बेचैन हो रही थी।

सारस ने लोमड़ी से कहा — "आओ बहिन मेरा खाना बिल्कुल तैयार है लो खाना शुरू करो।"

लोमड़ी धीरे से अपना मुँह उस सुराही जैसे बरतन के पास ले गयी और उसमें से चावल खाने की कोशिश की परन्तु बहुत लम्बी

जीभ निकालने के बाद भी उसकी जीभ उस सुराही में रखे चावलों तक न पहुँच सकी।

सारस ने अपनी लम्बी चोंच उस बरतन में डाली और थोड़े थोड़े चावल धीरे धीरे खाता रहा। लोमड़ी बैठी बैठी सारस को वह बढ़िया खुशबूदार चावल खाते देखती रही।

सारस का जब पेट भर गया तो बोला — "मैंने तो आज बहुत दिनों बाद बहुत अच्छा खाना खाया सो बहुत ही ज़्यादा खाना खाया गया। अब मुझे तो नींद भी आने लगी है।"

और यह कह कर सारस वहीं फ़र्श पर लेट गया और जल्दी ही खर्राटे मारने लगा। लोमड़ी बेचारी अपना सा मुँह ले कर भूखी अपने घर वापस चली आयी।

उस दिन से आज तक लोमड़ी और सारस की बोलचाल बन्द है।

सारस अभी भी वहीं धूप सेकता है लोमड़ी अभी भी वहीं पानी पीने आती है परन्तु दोनों एक दूसरे को नमस्ते तक नहीं करते बोलना तो दूर।

2 आदमी और शेर

यह कहानी भी मेरे बचपन की पहली पहली कहानियों में से एक है। और शायद यह सबसे पहली कहानी है जो मैंने तब सुनी थी जब हम अक्ल का मतलब भी नहीं समझते थे।

सच्चाई तो यह है कि अक्ल वाकई बहुत ही बड़ी और ताकतवर चीज़ होती है। वह ताकतवर से ताकतवर दुश्मन को भी हरा सकती है।

मगर इसके साथ एक परेशानी है वह यह कि यह बाजार में नहीं मिलती इसलिये इसको खरीदा नहीं जा सकता। पर विद्वानों का कहना है कि कोशिश करने से इसको बहुत ही थोड़ा सा बढ़ाया जा सकता है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसने शेर का एक पिंजरा रखा देखा। उसमें एक शेर बन्द था। वह पिंजरे में बेचैनी से इधर उधर घूम रहा था। वह आदमी उस शेर की मजबूरी को देख कर मुस्कुरा दिया।

असल में वह शेर कई दिनों से उस पिंजरे में बन्द था। दिन भर में जो भी उस रास्ते से गुजरता वह शेर उसी से प्रार्थना करता कि

वह उसे उस पिंजरे में से निकाल दे पर कोई भी उसे इस डर से पिंजरे से बाहर नहीं निकालता था कि पिंजरे में से निकल कर वह उसी को खा जायेगा।

कई दिनों से पिंजरे में बन्द होने की वजह से वह भूखा भी बहुत था। सो हर बार की तरह से उसने इस आदमी से भी अपने आपको बाहर निकालने की प्रार्थना की।

यह आदमी बहुत दयालु था। शेर को भूख से तड़पता देख कर उसे उस शेर पर दया आ गयी। वह उसे निकालने ही वाला था कि उसको ध्यान आया कि शेर तो भूखा है निकलते ही उसे खा जायेगा।

इसलिये उसने शेर से कहा — “मगर शेर भाई, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। तुम तो पिंजरे में से निकलते ही मुझे खा जाओगे।”

शेर बोला — “नहीं भाई, मैं वायदा करता हूं कि मैं तुमको बिल्कुल नहीं खाऊँगा। तुम तो मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाओगे फिर मैं तुम्हें कैसे खा सकता हूँ। मेहरबानी करके बस तुम मुझे इस किसी तरह इस पिंजरे से बाहर निकाल दो।”

उस आदमी को अभी भी विश्वास नहीं आया कि शेर पिंजरे से बाहर निकलने के बाद उसे नहीं खायेगा, सो उसने एक बार फिर शेर से पूछा — “पक्का? तुम मुझे पिंजरे से बाहर निकलने के बाद नहीं खाओगे?”

शेर बोला — “पक्का वायदा आदमी भाई, मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं खाऊँगा।”

यह सुन कर वह आदमी पिंजरे के ऊपर चढ़ा और उसका दरवाजा खोल दिया। शेर बहुत ही खुश हुआ। वह तुरन्त ही बाहर निकल आया और आज़ादी की एक अँगड़ाई ली।

वह भूखा तो था ही उस आदमी से बोला — “भाई, मुझे बाहर निकालने के लिये तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। पर मुझे बहुत भूख लगी है। यहाँ मुझे खाने के लिये और तो कुछ दिखाई नहीं देता जिसे मैं खा लूँ इसलिये मैं तुमको ही खा कर अपना पेट भर लूँगा।”

यह सुन कर तो वह आदमी बहुत घबराया और थर थर काँपने लगा। उसने तो शेर के वायदे पर ही वह पिंजरा खोला था और शेर को आजाद किया था और वही शेर अब उसको खाना चाहता है।

सच है किसी के साथ भलाई करने का जमाना ही नहीं रह गया। पर अब वह क्या करे? अपनी जान कैसे बचाये? उसकी तो जान पर बन आयी थी।

उसने शेर को समझाने की बहुत कोशिश की कि उसने शेर को पिंजरे से बाहर निकाल कर उसके ऊपर कितना बड़ा एहसान किया है। कम से कम उसी एहसान के बदले में वह उसको बख्श दे। नहीं तो उसने जो उससे वायदा किया था उसी की लाज रख ले।

परन्तु शेर ने उसकी एक न सुनी। उसको तो भूख लगी थी वह तो बस उसको खाना चाहता था।

उस आदमी को पसीना आ गया। मौत उसकी आँखों के सामने नाच रही थी। उसने चारों ओर देखा कि शायद उसे कोई सहायता के लिये मिल जाये पर उसे कहीं कोई दिखाई ही नहीं दे रहा था और उसको कोई और रास्ता नजर नहीं आ रहा था।

तभी उसको एक और आदमी उधर आता नजर आ गया। उस आदमी को कुछ आशा बँधी कि शायद वह उसकी कुछ सहायता कर सके।

दूसरा आदमी जब पास आ गया तो उस दूसरे आदमी ने देखा कि एक आदमी एक शेर के पास खड़ा है और उसे कुछ समझाने की कोशिश कर रहा है।

दूसरा आदमी समझ गया कि जरूर ही दाल में कुछ काला है। वह पहले तो डरा फिर कुछ सोचता हुआ आगे बढ़ा और पहले आदमी से पूछा — "भाई, क्या बात है। तुम कुछ परेशान से नजर आ रहे हो। क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

पहले आदमी ने शुरू से आखीर तक उसे सारा किस्सा बता दिया। यह दूसरा आदमी कुछ अक्लमन्द था।

वह कुछ सोच कर पहले आदमी से बोला — "तुम इस पिंजरे पर चढ़ जाओ और जब मैं इशारा करूँ तो इस पिंजरे का दरवाजा तुरन्त बन्द कर देना। तब तक मैं शेर से निपटता हूँ।"

पहला आदमी तुरन्त पिंजरे के ऊपर चढ़ गया और दूसरे आदमी के इशारे का इन्तजार करने लगा।

इधर दूसरा आदमी शेर से बोला — "शेर जी, आपने सुना कि इस आदमी ने क्या कहानी बतायी? मैं इस आदमी की कहानी पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता।

इसीलिये मैंने इस आदमी को ऊपर भेज दिया। अब मैं यह कहानी आपके मुँह से सुनना चाहता हूँ। मुझे यकीन है कि आप मुझे यह कहानी ठीक से ही बतायेंगे।"

शेर को यह सुन कर बहुत अच्छा लगा कि आदमी आदमी पर विश्वास नहीं कर रहा था और वह उस कहानी को उससे सुनना चाह रहा था। तो शेर ने भी अपनी कहानी उस आदमी को सुना दी।

आदमी बोला — "शेर जी, वैसे यह आपकी यह बड़ी गलत बात है कि जिस आदमी ने आपको आजाद किया आप उसी को खाना चाहते हैं।"

शेर बोला — "आदमी भाई, मैं क्या करूँ। मैं कई दिनों का भूखा हूँ। उस समय मुझे उस आदमी के अलावा कोई और पिंजरे में से बाहर निकालने वाला दिखायी ही नहीं दे रहा था तो अपने को बाहर निकलवाने के लिये मैंने उससे उसको न खाने का वायदा कर लिया।

पर बाहर निकल कर मुझे और कोई चीज़ खाने के लिये दिखायी नहीं दी तो मैं उसी को ही खा रहा था। अब मुझे आप दिखायी दे गये है तो मैं आपको खा लेता हूँ।"

यह सुन कर तो दूसरा आदमी भी परेशान हो गया पर साहस के साथ बोला — "शेर जी, बाकी सब तो मेरी समझ में आ रहा है पर एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि आप कह रहे थे कि आप इस पिंजरे में बन्द थे।

पर आप जैसा ताकतवर जानवर इस पिंजरे में बन्द हुआ ही कैसे? मुझे बिल्कुल भी विश्वास नहीं होता कि आप जैसा ताकतवर शेर भी इस पिंजरे में बन्द हो सकता है। क्या आप मुझे इसमें बन्द हो कर दिखायेंगे कि आप इस पिंजरे में कैसे बन्द थे?"

शेर इस दूसरे आदमी को देख कर बहुत खुश था कि अब उस को दो दो आदमी खाने के लिये मिलेंगे। इस खुशी में वह यह भूल गया कि वह क्या करने जा रहा है।

वह तुरन्त ही पिंजरे में अन्दर जा कर खड़ा हो गया और बोला — "जनाब मैं यहाँ इस तरह बन्द था।"

जैसे ही वह शेर पिंजरे के अन्दर गया उस आदमी ने ऊपर वाले आदमी को इशारा कर दिया और उसने पिंजरे का दरवाजा नीचे गिरा दिया।

इस तरह शेर फिर से पिंजरे में बन्द हो गया और इस तरह दूसरे आदमी ने अपनी अक्लमन्दी से अपने दोनों आदमियों की जान बचायी।

बच्चों, जिन लोगों का स्वभाव जैसा होता है वे अपने स्वभाव के अनुसार ही काम करते हैं। इसलिये उनका स्वभाव जान कर ही उनकी बातों पर भरोसा करना चाहिये।

दूसरे, बेवकूफ लोग अपनी बेवकूफी से खुद भी मुश्किल में पड़ जाते हैं और दूसरों के लिये भी मुश्किल खड़ी कर देते हैं जैसा कि पहले आदमी ने किया।

जबकि अक्लमन्द लोग अपनी मुश्किलें भी हल कर लेते हैं और दूसरों को भी मुश्किलों से निकाल लाते हैं जैसा कि दूसरे आदमी ने किया।

3 मुंशी जी की तनख्वाह ज़्यादा क्यों

यह कहानी भी अक्ल की है और बहुत पुरानी है।

एक बार की बात है कि एक शहर में एक बहुत बड़ा साहूकार रहता था। यह साहूकार एक बहुत ही अमीर आदमी था सो उसके पास कई नौकर चाकर थे और उसके पास एक मुंशी भी था जो उसके पैसों का हिसाब किताब रखता था।

उस शहर से कई कारवाँ गुजरते थे सो वह साहूकार उन आते जाते लोगों को पैसे उधार दिया करता था और वह मुंशी उन पैसों का हिसाब किताब रखता था।

उसके नौकरों में से एक नौकर ऐसा भी था जो उस मुंशी से बहुत जलता था। वह देखता था कि उसको खुद को तो बहुत काम करना पड़ता था और उसको डाँट भी बहुत पड़ती थी परन्तु मुंशी जी? अरे वाह उनकी शान का क्या कहना।

रोज सुबह मुंशी जी साफ सुथरे धुले कपड़े पहन कर आँखों में सुरमा लगा कर, चश्मा चढ़ा कर और कान में कलम लगा कर आ जाते और आ कर एक ऊँचे से चबूतरे पर उस पर बिछे हुए एक मोटे से गद्दे पर एक मोटे से तकिये के सहारे बैठ जाते।

सारा दिन वह वहीं बैठे रहते। उनके सामने उनका एक नीची सी मेज रखी रहती जिस पर उनकी बही खाता रखा रहता। कभी

कभी वह अपने सामने रखी बही में कुछ लिख लेते नहीं तो वह वहाँ बैठे बैठे आने जाने वालों से बतियाते रहते।

उनका खाना भी उनके लिये नौकर चाकर वहीं ला कर दे जाते थे। शाम को वह अपनी बही बन्द कर देते, उसको तिजोरी में रखते और फिर तिजोरी भी बन्द करके अपने घर चले जाते।

यही उनका रोज का कार्यक्रम था। मुंशी जी को तनख्वाह भी काफी ज़्यादा मिलती थी। इन्हीं सब बातों से वह नौकर उनसे बहुत जलता था।

एक दिन उसने सोचा कि वह इस बारे में साहूकार से बात करेगा कि ऐसा क्यों होता है।

सो एक दिन हिम्मत करके वह साहूकार के पास गया और बोला — "सरकार मैं सारा दिन मेहनत करके आपके घर का इतना सारा काम करता हूँ और आप मुझे केवल पाँच रुपया महीना देते हैं पर इन मुंशी जी को जो सारा दिन गद्दे पर बैठ कर आराम करते हैं उन्हें आप सौ रुपया महीना देते हैं। ऐसा क्यों?"

एक बार को तो साहूकार को उस छोटे से नौकर की यह बात बहुत बुरी लगी परन्तु वह कुछ सोच कर बोला — "वक्त आने दो मैं तुम्हें तभी बताऊँगा।"

इस बात को कुछ दिन बीत गये। नौकर इन्तजार करता रहा कि कब वह दिन आयेगा जब उसको अपने सवाल का जवाब मिलेगा।

सो बच्चों एक दिन वह दिन भी आ गया जब उस नौकर को उसके सवाल का जवाब मिला।

एक दिन उस शहर के पास एक काफिला आ कर रुका। साहूकार ने अपने उस नौकर को बुलाया और कहा — "आज मैं तुम्हें बताता हूँ कि मुंशी जी को ज़्यादा तनख्वाह क्यों मिलती है।"

यह कह कर उसने मुंशी जी को भी वहीं बुला लिया और दोनों से कहा — "सुना है शहर के बाहर एक काफ़िला आ कर रुका है। जा कर ज़रा पता तो करो कि वह काफिला कहाँ जा रहा है।" दोनों ने "जी हुज़ूर" कहा और चले गये।

नौकर ने थोड़ी देर में आ कर साहूकार को बताया कि वह काफिला पेशावर जा रहा है।

साहूकार ने पूछा — "और कहाँ से आ रहा है?"

नौकर बोला "यह तो पता नहीं। यह तो मैंने पूछा ही नहीं। अभी पूछ कर आता हूँ।" और तुरन्त ही वापस लौट गया।

वह थोड़ी देर बाद ही आ कर बोला — "हुज़ूर वह दिल्ली से आया है।"

साहूकार ने फिर पूछा — "उसका यहाँ कितने दिन रुकने का इरादा है?"

नौकर सिर झुका कर बोला "यह तो पता नहीं सरकार। यह तो मैंने पूछा नहीं।"

और वह फिर शरमिन्दा सा तुरन्त वापस लौट गया। वह फिर थोड़ी देर बाद आया और बोला — "हुज़ूर वे लोग यहाँ करीब एक हफ्ता रुकने वाले हैं।"

इस तरह नौकर ने उस काफिले के बारे में कई बार में उतनी जानकारी हासिल की जितनी कि साहूकार जानना चाहता था।

साहूकार फिर नौकर से बोला — "अब देखते हैं मुंशी जी क्या बताते हैं।" उसने मुंशी जी को बुलाया।

मुंशी जी आये और बोले — "हुज़ूर यह काफिला दिल्ली से आया है और पेशावर जा रहा है। यह काफ़िला यहाँ दस दिन रुकेगा। ये लोग यहाँ परसों ही आये थे सो एक हफ्ते बाद चले जायेंगे।

इस काफ़िले में **50** आदमी, **30** औरतें और **17** बच्चे हैं। **10** घोड़े और **35** ऊँट भी हैं। पेशावर में एक महीना रहने के बाद ये लोग इसी रास्ते से वापस दिल्ली चले जायेंगे।"

साहूकार ने मुंशी जी से कहा — "ठीक है मुंशी जी। अब आप जा सकते हैं।"

जब मुंशी जी चले गये तो साहूकार ने उस नौकर से पूछा — "मिल गया तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब?"

नौकर मुंशी जी का एक ही बार में काफिले के बारे में इतना पूरा जवाब सुन कर बहुत ही अधिक शरमिन्दा हुआ और सलाम कर

के मुँह लटका कर अपना काम करने चला गया और फिर कभी मुंशी जी से अपना मुकाबला नहीं किया।

अब वह उनसे जलता भी नहीं था बल्कि खुशी खुशी उनकी सेवा करता था क्योंकि अब वह उनको अक्लमन्द समझता था।।

तो बच्चों इसलिये मिलते थे मुंशी जी को सौ रुपया महीना और नौकर को केवल पॉच रुपया महीना।

क्योंकि मुंशी जी नौकर से कहीं ज़्यादा अक्लमन्द थे। वह सारी खबरें एक ही बार में और बिना कहे ही ले आये जो वह नौकर कई बार में और बार बार पूछने पर ले कर आया था।

हुई न अक्लमन्दी बड़ी?

4 गधा डूबा क्यों

बच्चों यह कहानी हमें वफादारी सिखाती है कि हमको अपने फायदे के लिये किसी को धोखा नहीं देना चाहिये बल्कि जिसके लिये हम काम करते हैं उसके साथ वफादार रहना चाहिये।

एक बार की बात है कि एक गाँव में एक व्यापारी रहता था। उसके पास एक गधा था। वह उस गधे को हर इतवार को शहर के बाजार में सामान खरीदने और बेचने के लिये ले कर जाया करता था।

वह शहर जा कर वहाँ के बाज़ार से नमक खरीदता था और गाँव में ला कर उसे ऊँचे दाम पर बेच देता था। इस रास्ते में एक नदी भी पड़ती थी।

एक बार की बात है कि वह व्यापारी गधे पर बाजार से नमक खरीद कर गाँव ला रहा था कि उस दिन जब वह गधा नदी पार कर रहा था तो उसमें उसका पैर फिसल गया।

गधा पानी में गिर गया पर किस्मत से वह एक ही डुबकी में सँभल भी गया और नदी पार कर आ गया। पर कुछ दूर चलने के बाद उसको लगा कि उसकी पीठ पर लदा बोझ कुछ कम हो गया है।

बच्चों क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा कैसे हुआ?

उसकी पीठ पर नमक लदा था न और नमक पानी में घुल जाता है। तो जब गधा पानी में पैर फिसलने की वजह से गिर पड़ा तो उस समय उसकी पीठ पर लदा थोड़ा सा नमक पानी में घुल गया जिसकी वजह से उसका थोड़ा सा बोझा कम हो गया।

इसीलिये कुछ दूर चलने के बाद उसको ऐसा लगा कि उसकी पीठ पर लदा बोझ कुछ कम हो गया है। गधे को यह देख कर बहुत खुशी हुई।

हालाँकि वह गधा काफी बेवकूफ था फिर भी उसको ऐसा लगा कि उसका यह बोझ नदी में उसके पैर फिसलने की वजह से ही कम हुआ था।

अब क्या था अगली बार जब वह व्यापारी उसको बाजार से नमक लाद कर वापस ला रहा था तो उसके गधे ने अपनी पिछली वाली घटना याद करके चुपके से नदी में एक डुबकी मार ली।

अब वह फिर से अपना बोझा कुछ हल्का महसूस करने लगा था। इसके बाद तो उसे पक्का हो गया कि हो न हो इस नदी में डुबकी मारने से ही उसका बोझ हल्का हो जाता है।

बस अब क्या था अब तो गधे के मजे आ गये। अब वह हर बार बाजार से आते समय नदी में एक डुबकी लगाता और उसका बोझा हल्का हो जाता और वह खुशी खुशी घर आ जाता।

लेकिन इधर व्यापारी बहुत परेशान था क्योंकि जितना नमक वह बाजार से खरीदता था घर आ कर वह नमक उतना नहीं रहता

था हमेशा ही कम हो जाता था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि उसका नमक जा कहाँ रहा है।

इस बार उसने सोचा कि वह गधे पर कड़ी नजर रखेगा कि देखता हूँ कि गधा रास्ते भर क्या करता है।

व्यापारी ने ऐसा ही किया। अगली बार नमक लादने के बाद वह गधे पर कड़ी नजर रखे रहा।

रास्ते भर तो उसने कुछ नहीं किया परन्तु जब वह नदी पार करने लगा तो उसने सबकी आँख बचा कर नदी में एक डुबकी मार ली। परन्तु उसकी यह डुबकी अबकी बार व्यापारी की आँखों से नहीं बच सकी।

अब व्यापारी को अपने नमक के कम होने की वजह पता चल गयी थी। उसने भी गधे को इस बेवफाई की सजा देने की तरकीब निकाल ली।

अगली बार व्यापारी ने बाज़ार से नमक नहीं खरीदा बल्कि रुई खरीदी और उस गधे पर लाद दी। गधा अपना बोझा ले कर चल दिया। अब उस गधे बेचारे को क्या पता था कि अबकी बार व्यापारी ने नमक की बजाय रुई खरीद ली थी।

सो रास्ते में जब नदी पड़ी तो पहले की तरह इस बार भी उसने सबकी आँख बचा कर नदी में डुबकी मार ली। पर उसकी यह डुबकी भी व्यापारी की नजर से नहीं बच सकी।

पर यह क्या? पानी में डुबकी लगाते ही उसका बोझा कम होने की बजाय बढ़ गया।

बच्चो क्या तुम बता सकते हो कि इस बार पानी में डुबकी लगाते ही गधे का बोझा क्यों बढ़ गया?

हॉ ठीक कहा तुमने। क्योंकि इस बार उसके ऊपर रुई लदी थी नमक नहीं और रुई पानी सोख लेती है। सो जैसे ही उसने नदी में डुबकी मारी उसकी रुई में पानी भर गया और उसका बोझा बढ़ गया।

वह तो उस बोझे के साथ उठ कर खड़ा भी नहीं हो सका। तब व्यापारी खुद आया ओर उसने गधे को सहारा दे कर पानी में से ऊपर उठाया। गधा इस बात पर बहुत शरमिन्दा था।

गधे का यह पहला अनुभव था। उसे इस अनुभव से पता चल गया कि उसकी पोल खुल चुकी है सो अगली बार से उसने अपनी शरारत बन्द कर दी और व्यापारी फिर से उसके ऊपर अपना नमक लाद कर लाने लगा।

5 खरगोश और शेर की कहानी

यह कहानी अक्लमन्दी की एक ऐसी कहानी है जिसमें एक छोटा सा खरगोश अपनी अक्लमन्दी से जंगल के सारे जानवरों की जान बचाता है। कैसे? आओ पढ़ते हैं।

एक बार की बात है एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उसी जंगल में एक शेर भी रहता था। वह मनमाना शिकार करता था और कितने भी जानवर कभी भी मार कर खा जाता था।

जंगल के सारे जानवर उसकी इस हरकत से बहुत परेशान थे। उसकी इस हरकत को रोकने के लिये उन्होंने आपस में एक मीटिंग की और सबसे सलाह माँगी कि उन लोगों को क्या करना चाहिये ताकि शेर का जानवरों को अक्सर मारना रोका जा सके।

सो जंगल के सभी जानवरों ने उस मीटिंग में यह निश्चय किया कि — "बजाय इसके कि शेर किसी भी जानवर को कभी भी खाये अगर हम उसको हर हफ्ते एक जानवर और कुछ खाना भेज दिया करें तो कैसा रहे।"

सब जानवरों ने अपना यह निश्चय जंगल के राजा को बताया तो शेर तो बहुत खुश हो गया। उसको इससे ज़्यादा और क्या चाहिये था कि उसको घर बैठे पेट भर खाना मिल रहा था। वह तुरन्त ही राजी हो गया।

पर अब अपने आप जाये कौन? सो यह तय हुआ कि जानवर हर हफ्ते एक लौटरी निकालेंगे और जिसके नाम की लौटरी निकलेगी वही जानवर उस हफ्ते शेर के पास जायेगा। सब जानवर इस बात पर राजी हो गये क्योंकि और कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

शेर को तो अब बहुत ही आसानी हो गयी। उसको घर बैठे हर हफ्ते खाना मिलने लगा। हर हफ्ते उसके पास एक जानवर और कुछ और खाना आ जाता और शेर उसको खा कर सारा दिन अपनी गुफा में पड़ा पड़ा सोता रहता।

अब वह भूखा भी नहीं रहता था और उसको अब शिकार के लिये कहीं बाहर भी नहीं जाना पड़ता था। इस तरह अब उसके दिन आराम से गुजरने लगे।

इधर जानवर हर हफ्ते लाटरी निकालते और जिस जानवर का नाम लाटरी में निकलता उसको शेर के पास भेज दिया जाता। वह जानवर बेचारा अपने परिवार को रोता बिलखता छोड़ कर शेर का खाना बन कर चला जाता।

एक दिन लाटरी में एक भालू का नाम निकला तो दूसरी बार एक बन्दर का। तीसरी बार एक हिरन का नाम निकला तो चौथी बार एक बारहसिंगे का।

इस तरह शेर और जानवर दोनों ही सुखी थे कि...

एक बार लौटरी में एक छोटे से खरगोश का नाम निकला। खरगोश चालाक था। पहले तो वह बोला — "मैं तो बहुत ही छोटा सा जानवर हूँ। मुझ जैसे छोटे से जानवर को खा कर इतने बड़े शेर का क्या काम बनेगा। आप लोग किसी बड़े जानवर का नाम निकालें।"

पर जानवरों ने उसकी एक न सुनी और आखिरकार खरगोश को ही शेर का खाना बन कर शेर के पास जाना पड़ा। खरगोश था तो बहुत छोटा पर था बड़ा अक्लमन्द।

वह अभी मरना नहीं चाहता था सो वह शेर से बचने की कोई तरकीब सोचने लगा। सोचते सोचते उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

खरगोश इतनी देर सोया, इतनी देर सोया कि उसका शेर के पास पहुँचने का समय ही निकल गया। वह तो सोता ही रह गया था और उधर शेर अपने शिकार का इन्तजार कर रहा था।

उसको बहुत भूख लग रही थी पर उसे कोई भी जानवर ही आता दिखायी नहीं दे रहा था। धीरे धीरे शेर का गुस्सा बढ़ने लगा और गुस्से से वह अपनी गुफा में ही इधर से उधर चक्कर काटने लगा।

इतने में ही उसने देखा कि एक छोटा सा खरगोश हॉफता हुआ भागा चला आ रहा है।

उस छोटे से खरगोश को देख कर तो शेर का गुस्सा और भी बढ गया। एक तो उसका शिकार देर से आया और वह भी इतना छोटा सा।

खरगोश के आते ही वह उस पर बरस पड़ा — “ओ खरगोश के बच्चे, कहाँ रह गया था तू? इतनी देर से आ रहा है? मेरा तो भूख के मारे दम ही निकला जा रहा है।”

खरगोश गिरता पड़ता हाँफता शेर के सामने निढाल सा पड़ गया। कुछ पल बाद जब उसकी साँस में साँस आयी तो वह बोला — “राजा साहब राजा साहब, एक जंगल में एक ही तो शेर होता है न?”

शेर बोला — “यकीनन, एक जंगल में एक ही शेर होता है और वही उस जंगल का राजा होता है। जैसे मैं इस जंगल में एक अकेला शेर हूँ और इस जंगल का राजा हूँ।”

खरगोश बोला — “सरकार आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। मैं भी यही सोचता था। पर हुआ क्या कि जब मैं आपके पास आ रहा था तो मुझे रास्ते में एक और शेर मिल गया। उसने मुझसे पूछा तुम कहाँ जा रहे हो तो मैंने कहा कि मैं अपने राजा के पास जा रहा हूँ।

वह बोला — “पर इस जंगल का राजा तो मैं हूँ तुम किस राजा के पास जा रहे हो? मैंने कई दिनों से कुछ खाया नहीं है मुझे बहुत भूख लगी है। अब मैं तुमको खाऊँगा।”

सरकार, जैसे तैसे मैं उस शेर से अपनी जान बचा कर भागा चला आ रहा हूँ।"

यह सुन कर तो शेर आग बबूला हो गया। वह गुस्से से लाल पीला हो कर बोला — "क्या कहा तुमने? तुमने दूसरा शेर देखा? अभी चल कर दिखाओ मुझे कि कहाँ है वह दूसरा शेर। मैं उसे जान से मार डालूँगा। इस जंगल का राजा मैं हूँ और केवल मैं ही इस जंगल में रहूँगा।"

खरगोश खुश हो कर बोला — "चलिये राजा साहब, जल्दी चलिये। कहीं ऐसा न हो कि वह कहीं भाग जाये।"

शेर अपनी भूख तो भूल गया और तुरन्त ही खरगोश के पीछे पीछे चल दिया।

खरगोश शेर को एक कुँए के पास ले गया और इधर उधर देखता हुआ बोला — "अरे, अभी अभी तो मैं उसे यहीं छोड़ कर गया था कहाँ चला गया। उसे तो यहीं होना चाहिये था पर कहीं दिखायी नहीं दे रहा। ऐसा लगता है कि आपको आता देख कर वह इस कुँए में छिप गया है।"

शेर को भी कुछ ऐसा ही लगा। उसने खरगोश से कहा — "ज़रा कुँए में झाँक कर तो देखो कि वह शेर वहाँ है कि नहीं।"

खरगोश डरने का नाटक करता हुआ बोला — "सरकार, मैं नहीं देख सकता, मुझे डर लगता है।"

शेर बोला — "ठीक है मैं ही देखता हूँ उसको कि वह कहाँ छिपा बैठा है। आज मैं उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा।"

ऐसा कह कर वह उस कुँए की जगत पर बैठ कर कुँए में झाँकने लगा और बोला — "अरे ओ शेर, कहाँ है तू? कहाँ छिपा बैठा है? हिम्मत है तो निकल कर बाहर आ और मेरा सामना कर।"

ऐसा कह कर उसने जो कुँए में झाँका तो कुँए के पानी में उसको अपनी परछाँई दिखायी दी। उसने समझा कि वही दूसरा शेर है। खरगोश की बात सही जान कर उसका पारा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया।

वह बोला — "अच्छा तो तू यहाँ छिप कर बैठा है। चल बाहर निकल। डरपोक कहीं का।"

अब बच्चों, कुँए में तो आवाज गूँज जाती है सो शेर की आवाज भी गूँज गयी — "अच्छा तो तू यहाँ छिप कर बैठा है। चल बाहर निकल। डरपोक कहीं का।"

शेर को लगा कि दूसरा शेर उसको ललकार रहा है। सो उसने फिर कहा — "मैं नहीं तू बाहर आ। तू मेरे डर से छिपा बैठा है।"

और उसकी यह आवाज भी गूँज गयी।

इस ललकार से उसको इतना अधिक गुस्सा आया कि वह बोला — "अच्छा तो यह ले, सॅभल, मैं आ रहा हूँ।"

और यह कहते के साथ ही वह उस कुँए में कूद गया उस शेर को मारने के लिये।

पर वहाँ दूसरा शेर तो कोई था नहीं वहाँ तो केवल उसकी अपनी परछाईं ही थी सो वह कुँए में गिरते ही मर गया।

यह देख कर खरगोश खुशी खुशी घर वापस आ गया।

उधर खरगोश की पत्नी, बच्चे और माता पिता बहुत दुखी थे। वे सोच रहे थे कि अब वे खरगोश को कभी नहीं देख पायेंगे। पर खरगोश को खुशी खुशी घर वापस आता देख कर वे आश्चर्य में पड़ गये कि खरगोश मौत के मुँह में से वापस कैसे आ गया।

खरगोश ने आ कर सबको अपनी कहानी सुनायी। जंगल के सब जानवर खरगोश की अक्लमन्दी की कहानी सुन कर बहुत खुश हुए कि अब उनमें से किसी को भी शेर के पास नहीं जाना पड़ेगा।

तो बच्चो, इस प्रकार एक छोटे से खरगोश ने अपनी अक्लमन्दी से जंगल के सारे जानवरों की जान बचायी।

6 गीदड़ और शेर

अक्ल की एक और कहानी। बच्चों अक्ल तो केवल अक्ल होती है। अक्ल एक या दो या फिर पचास तो होतीं नहीं।

इस कहानी में एक गिदड़िया[1] के पास सौ अक्ल हैं पर जब उनको काम में लाने का मौका आता है तो उसकी सब अक्लें गायब हो जाती हैं। उसका केवल एक अक्ल से ही काम निकल पाता है।

एक बार एक गीदड़ और उसकी पत्नी गिदड़िया शाम को नदी के किनारे टहल रहे थे। गिदड़िया को अपनी अक्लमन्दी पर बहुत घमंड था और वह गीदड़ को बिल्कुल बेवकूफ समझती थी।

जब भी कभी अक्लमन्दी की बात आती तो गिदड़िया बड़े घमंड से कहती "मेरे पास सौ अक्ल हैं।"

और गीदड़ बेचारा मुँह लटका कर कहता "मेरे पास तो केवल एक ही अक्ल है गिदड़िया रानी।"

घूमते घूमते वे लोग बहुत सारी बातें कर रहे थे, अपने बच्चों की, अपने आने वाले दिनों की, अपने बूढ़े माता पिता की।

साथ में वे इधर उधर भी देखते जा रहे थे कि तभी उन्होंने शेर की दहाड़ की आवाज सुनी। शेर की दहाड़ सुनते ही गिदड़िया काँप गयी।

[1] Female jackal

उसने गीदड़ से पूछा — “प्रिय, क्या तुमने भी वही सुना जो मैंने सुना?”

गीदड़ भी उस आवाज को सुन कर डर गया था। कॉपते हुए वह बोला — “हॉ गिदड़िया रानी, मैंने भी वह सुना जो तुमने सुना।”

पर वे लोग रुके नहीं और उन्होंने अपना घूमना जारी रखा।

इतने में उन्होंने शेर की दहाड़ दोबारा सुनी। शेर की दहाड़ दोबारा सुन कर तो गिदड़िया बहुत ही घबरा गयी। उसने अपने पति से शेर से बचने की कोई तरकीब सोचने के लिये कहा।

गीदड़ मरी सी आवाज में बोला — “मेरे पास तो केवल एक ही अक्ल है प्रिये, मैं क्या कर सकता हॅू? तुम्हारे पास तो सौ अक्ल हैं तुम ही कोई तरकीब सोचो।”

इस बीच उन्होंने शेर की फिर एक दहाड़ सुनी। इस बार वह दहाड़ उनको कहीं पास से ही आती सुनायी दी।

गिदड़िया तो उसको सुन कर बहुत जोर से कॉपने लगी और बोली — “प्रिये, मेरी पचीस अक्लों ने तो काम करना तभी बन्द कर दिया था जब मैंने शेर की पहली दहाड़ सुनी थी।

मेरी दूसरी पच्चीस अक्लों ने काम करना तब बन्द कर दिया था जब मैंने उसकी दूसरी दहाड़ सुनी थी और बाकी पच्चीस अक्लों ने काम करना अब बन्द कर दिया है।

अब मेरे पास जो केवल पच्चीस अक्ल बची हैं उन्हीं को काम में लाने की कोशिश करती हूँ। तब तक तुम भी कुछ सोचो।"

गीदड़ ने कोई जवाब नहीं दिया और अपना घूमना जारी रखा।

तभी उन्होंने एक और दहाड़ सुनी और लो वह दहाड़ तो उनके सामने से ही आ रही थी। अब तो शेर उनके सामने ही खड़ा था।

गिदड़िया तो उसको देख कर गिरते गिरते बची। डर के मारे वह गीदड़ से चिपक कर खड़ी हो गयी।

उसने गीदड़ का हाथ पकड़ते हुए कहा — "प्रिय, मेरी तो बाकी बची पच्चीस अक्ल भी चली गयीं अब मैं कुछ नहीं सोच सकती।"

और यह कहते हुए वह अपने पति के और पीछे दुबक गयी।

गीदड़ बोला — "अच्छा तो फिर मैं ही कुछ सोचता हूँ।"

इतने में शेर उनके पास आ कर बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ ओ गीदड़। मैं तुम दोनों को खाना चाहता हूँ।"

गीदड़ ने उसे इज़्ज़त से सिर झुका कर सलाम किया और सबसे पहले उसके परिवार की कुशलता के बारे में पूछा।

गीदड़ फिर बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। हम तो आपकी प्रजा हैं और आपकी सेवा में हमेशा ही हाजिर हैं पर हम तो बहुत ही पतले दुबले से हैं। हमको खा कर आपका पेट नहीं भरेगा।

हमारे मोटे मोटे पाँच बच्चे हमारे घर में हैं। अगर आप हुकुम करें तो घर जा कर हम उनको यहाँ ले आयें ताकि उनको भी आपकी सेवा का मौका मिले।

इस तरह से उनको भी आपकी सेवा का मौका मिल जायेगा और आपका पेट भी हम सबको खा कर भर जायेगा।"

शेर तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने तुरन्त ही गीदड़ को उन बच्चों को लाने के लिये उनके घर भेज दिया।

गिदड़िया ने भी शेर को इज़्ज़त से सिर झुका कर सलाम किया और गीदड़ और गिदड़िया दोनों कुछ दूर तक तेज़ तेज़ चल कर वहाँ से चले गये।

जब शेर उनकी आँख से ओझल हो गया तो वे फिर नदी के किनारे पर पहले की तरह घूमने लगे।

शेर उनका बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर फिर जब वे वहाँ नहीं आये तो वह भी वहाँ से चला गया।

इस घटना के बाद गिदड़िया ने न तो कभी अपनी अक्लमन्दी की शान बघारी और न ही कभी अपने पति को बेवकूफ कहा।

7 कुत्ता और मॉस का टुकड़ा

लोग सच कहते हैं कि लालच बुरी बला है। कई बार इसमें केवल ऐसा ही नहीं होता कि दूसरे की चीज़ नहीं मिल पाती बल्कि ऐसा भी होता है कि न तो दूसरे की चीज़ मिलती है और साथ में अपनी चीज़ भी चली जाती है जैसा कि इस कहानी में हुआ। तो लो पढ़ो ऐसी ही एक कहानी।

एक बार एक कुत्ते को कहीं से मॉस का एक टुकड़ा मिल गया। वह उसको कहीं अकेली जगह में बैठ कर आराम से खाना चाहता था सो उसको वह मुँह में दबा कर जंगल की तरफ चल दिया।

रास्ते में एक बड़ा सा नाला पड़ता था। उसके ऊपर एक पुल था। जंगल में जाने के लिये वह नाला पार करना पड़ता था सो जंगल में जाने के लिये जब वह नाला पार कर रहा था तो एकाएक उसकी निगाह उसके नीचे बहते पानी पर पड़ी।

उस पानी में उसे अपनी परछाईं दिखायी दी। उसने देखा कि उसके जैसा एक दूसरा कुत्ता मॉस का टुकड़ा लिये जा रहा था।

जैसे ही उसने वह दूसरा कुत्ता मुँह में मॉस का टुकड़ा दबाये देखा तो उसको लालच आ गया और वह उस दूसरे कुत्ते के मॉस के टुकड़े को हड़पने के लिये उस नाले में कूद पड़ा।

जैसे ही वह नाले में कूदा और उसने दूसरे कुत्ते का मॉस का टुकड़ा लेने के लिये अपना मुँह खोला तो उसका अपना मॉस का टुकड़ा तो पानी में गिर कर बह गया

और क्योंकि उस नाले में तो कोई दूसरा कुत्ता था नहीं केवल उसकी अपनी परछाईं थी तो उस दूसरे कुत्ते का मॉस का टुकड़ा भी उसको मिला नहीं।

इस तरह उस लालची कुत्ते को लालच में दूसरे कुत्ते का मॉस का टुकड़ा तो मिला ही नहीं बल्कि वह अपना मॉस का टुकड़ा भी खो बैठा। सच है लालच बुरी बला है।

8 मगर और बन्दर

यह कहानी मैंने आठवीं कक्षा की अपनी अंग्रेजी की पुस्तक में पढ़ी थी और मुझे बहुत अच्छी लगती थी। तो लो तुम भी पढ़ो यह अक्लमन्दी की कहानी।

एक चौड़ी सी नदी के किनारे एक बड़े से पेड़ पर एक छोटा सा बन्दर रहता था। उसी नदी में एक बड़ा सा मगर भी रहता था। दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे।

मगर अक्सर नदी से बाहर निकल आता। किनारे पर आ कर वह धूप सेकता अपने दोस्त बन्दर से बातें करता और फिर नदी में चला जाता।

उधर बन्दर भी कभी कभी पेड़ से कुछ मीठे मीठे फल तोड़ कर मगर की ओर फेंक देता। मगर उन फलों को उठा कर खा लेता। उसको वे फल बहुत स्वाद लगते थे।

इसी तरह उनकी दोस्ती चल रही थी कि एक दिन मगर ने बन्दर से कहा — "बन्दर भाई चलो मैं तुमको इस नदी की सैर करा कर लाऊँ।"

बन्दर बोला — "मगर भाई, मन तो मेरा भी बहुत करता है पानी में सैर करने को पर मुझे तैरना ही नहीं आता मैं क्या करूँ।"

मगर बोला — "तुम अपना मन मैला न करो बन्दर भाई। यह काम तुम मुझ पर छोड़ दो। यह कोई मुश्किल बात नहीं है।

तुम मेरी पीठ पर बैठ जाना और मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बिठा कर नदी की सैर करा लाऊँगा। तुम्हें तो पानी छुएगा भी नहीं।"

बन्दर राजी हो गया सो एक दिन मगर बन्दर को अपनी पीठ पर बिठा कर नदी की सैर करा लाया। बन्दर को यह सैर बहुत अच्छी लगी सो मगर अब उसको अक्सर ही नदी की सैर कराने के लिये ले जाने लगा।

दोनों के दिन बड़े अच्छे कट रहे थे कि एक दिन बन्दर ने मगर को रोज की तरह से खाने के लिये फल दिये। उस दिन मगर ने सोचा कि आज वह ये फल अपनी पत्नी और बच्चों को भी खिलायेगा सो उनमें से कुछ फल वह अपनी पत्नी और बच्चों के लिये भी ले गया।

उसकी पत्नी और बच्चों ने ऐसे मीठे फल पहले कभी नहीं खाये थे। उनको भी वे फल बहुत अच्छे लगे। अब मगर अक्सर ही कुछ फल अपने परिवार के लिये भी ले जाता।

कुछ दिन बाद मगर की पत्नी बोली — "यह बन्दर तुमको इतने मीठे फल हमारे लिये देता है। पर बन्दर तो ऐसे फल रोज ही खाता होगा।

जब ये फल इतने मीठे और रसीले हैं तो बन्दर का कलेजा तो इन मीठे फलों को रोज खाने की वजह से बहुत ही मीठा होगा। मुझे बन्दर का कलेजा खाना है। मुझे बन्दर का कलेजा चाहिये।"

पत्नी की ऐसी इच्छा सुन कर तो मगर सन्न रह गया। वह कुछ बोल ही नहीं पाया और वहाँ से खिसक लिया। पर मगर की पत्नी बन्दर का कलेजा नहीं भूली।

जब मगर घर लौटा तो उसने उसे फिर याद दिलाया। मगर ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की कि इस तरह तो उसका दोस्त मर जायेगा और दोस्ती में किसी को मारना ठीक नहीं पर उसकी समझ मे ही नहीं आया।

मगर सोचता रहा सोचता रहा पर वह कोई हल नहीं सोच सका। आखिर उसको बन्दर का कलेजा लाने जाना ही पड़ा। वह बहुत दुखी मन से किनारे की तरफ चल दिया।

वह सोचता जा रहा था किस तरह वह बन्दर को अपने प्यारे दोस्त को मारने के लिये अपने घर ले कर आयेगा।

इतने में नदी का किनारा आ गया। मगर को किनारे की तरफ आता देख कर बन्दर खुशी खुशी पेड़ से नीचे उतर आया और उसके हाल चाल पूछे।

मगर ने बन्दर को और दिनों की तरह उस दिन भी अपनी पीठ पर बिठाया और नदी की सैर कराने के लिये चल दिया।

पर उस दिन मगर बहुत उदास था। बन्दर ने भाँप लिया कि आज मगर उदास है। उसने उसकी इस उदासी की वजह जानने की कोशिश भी की परन्तु उसे कुछ पता नहीं चल सका।

मगर को किसी दूसरी ओर जाता देख कर बन्दर ने पूछा — "मगर भाई यह आज तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो।

मगर बोला — "बन्दर भाई, आज मैं तुम्हें नदी में दूर तक सैर करा कर लाऊँगा।" बन्दर यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

मगर जब बन्दर के पेड़ से थोड़ा दूर निकल गया तो उसने बन्दर को बताया कि आज वह उसे अपने घर ले जा रहा था क्योंकि उसकी पत्नी उसका कलेजा खाना चाहती है।

यह सुन कर बन्दर के तो होश ही उड़ गये। वह सोचने लगा कि अब वह क्या करे।

बन्दर के दिमाग ने तेज़ी से काम करना शुरू किया और तुरन्त ही वह बोला — "दोस्त तुमने मुझे पहले नहीं बताया। भाभी के लिये तो मेरा कलेजा फौरन हाजिर है पर एक परेशानी है और वह यह कि इस समय मेरा कलेजा मेरे पास नहीं है।"

मगर बन्दर की यह बात सुन कर चौंक गया और बीच में ही बोला — "क्या? तुम्हारा कलेजा तुम्हारे पास नहीं है तो फिर कहाँ है?"

बन्दर बोला — "मैं अपना कलेजा साथ ले कर नहीं घूमता मगर भाई। मैं जब बाहर जाता हूँ तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़

आता हूॅ। अगर तुम मुझे पहले बता देते तो मैं उसे अपने साथ ले आता।

पर अब अगर तुम्हें मेरा कलेजा चाहिये तो चलो मुझे वापस किनारे पर ले चलो तो मैं अपना कलेजा पेड़ पर से ले आता हूॅ।"

मगर बन्दर की बातों पर भरोसा करते हुए उसके पेड़ की तरफ वापस चल दिया और थोड़ी ही देर में मगर किनारे पर आ गया।

किनारा आते ही बन्दर कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और पेड़ पर जा कर बैठ गया। जब बन्दर कुछ देर तक वापस नहीं आया तो मगर ने उसको आवाज लगायी।

बन्दर बोला — "अरे बेवकूफ़ कोई अपना कलेजा पेड़ पर भी रखता है क्या?"

मगर वहॉ से यह सुन कर चला गया। मगर अपने दोस्त को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश था और बन्दर मगर से अपनी जान बचा कर बहुत खुश था। दोनों बहुत खुश थे।

मगर अब भी नदी के किनारे पर धूप सेकने आता था बन्दर अभी भी उसी पेड़ पर रहता था पर दोनों के मनों में गॉठ पड़ गयी थी।

न तो बन्दर ही अब मगर को पेड़ पर से मीठे मीठे फल नीचे फेंकता था और न मगर ही अब बन्दर को पानी में सैर कराता था।

वे अब एक दूसरे से बोलना तो दूर आपस में दुआ सलाम भी नहीं करते थे।

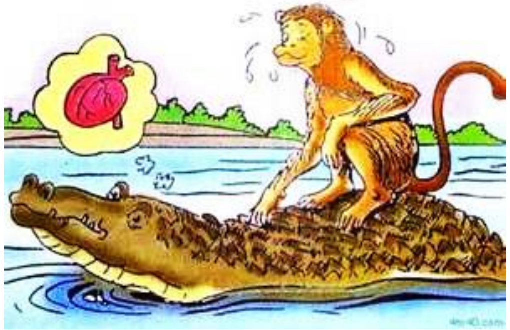

9 कछुआ और खरगोश की दौड़

बच्चों क्या तुमने कभी कछुआ देखा है? उसकी चाल देखी है? वह बहुत धीरे चलता है, चींटी से भी धीरे। और खरगोश? और वह तो बहुत तेज़ भागता है।

तो क्या तुम कभी यह सोच सकते हो कि कछुआ दौड़ के मुकाबले में खरगोश जैसे तेज़ भागने वाले को हरा दे? नहीं न। तो लो आओ इस कहानी में पढ़ते हैं कि चींटी से भी धीरे चलने वाले कछुए ने खरगोश जैसे तेज़ भागने वाले को कैसे हराया।

पर यह कैसे हुआ यह तो इस कहानी को पढ़ने के बाद ही पता चलेगा। तो लो पढ़ो यह कहानी कछुए और खरगोश की दौड़ के मुकाबले की। यह कहानी माता पिता अपने बच्चों को आलस न करना सिखाने के लिये सुनाते हैं।

एक जंगल में एक खरगोश और एक कछुआ रहते थे। खरगोश को अपने तेज़ भागने पर बड़ा घमंड था और कछुए को अपनी शाही चाल पर बड़ा नाज़ था।

एक दिन कछुए ने सोचा कि खरगोश के साथ दौड़ की जाये। सो वह खरगोश के पास गया और उसको अपने साथ दौड़ के लिये ललकारा।

खरगोश उसकी ललकार सुन कर बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "कछुए भाई तुम कहीं पागल तो नहीं हो गये हो? क्या मैंने ठीक सुना कि तुम मुझसे दौड़ का मुकाबला करना चाहते हो?

तुम मेरे साथ कैसे दौड़ सकते हो? जब तक तुम चलना शुरू भी नहीं करोगे तब तक तो मैं तुम्हारी तय की हुई जगह पर ही पहुँच जाऊँगा।"

कछुआ बोला — "यह तो देखने की बात है खरगोश भाई। देखते हैं क्या होता है पर मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं तुम्हारे साथ दौड़ूँ।"

खरगोश ने कछुए को बहुत समझाया कि दौड़ में हम दोनों का कोई मुकाबला नहीं है पर जब कछुआ नहीं माना तो खरगोश उसके साथ दौड़ने के लिये राजी हो गया।

दिन और समय तय किया गया। जंगल के सभी जानवरों को इस आश्चर्यजनक दौड़ को देखने के लिये बुलाया गया। ठीक समय पर सभी जानवर इकट्ठा हुए। कछुआ और खरगोश भी अपनी दौड़ के लिये तैयार थे।

दौड़ शुरू हुई। कछुआ अपनी शाही चाल से चल दिया और खरगोश तेज़ी से भाग लिया। कछुआ धीरे धीरे चलता रहा और खरगोश तेज़ी से भागता रहा।

कुछ दूर जा कर खरगोश ने सोचा "कछुआ तो बहुत ही धीमे चलता है। उसको तो यहाँ तक आने में भी अभी बहुत देर लगेगी मैं तब तक थोड़ा सुस्ता लेता हूँ।"

ऐसा सोच कर वह वहीं पास में लगे एक पेड़ के नीचे बैठ गया। ठंडी ठंडी हवा चल रही थी तो फिर वह लेट गया। लेटते ही उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

उधर कछुआ अपनी धीमी चाल से चलता रहा और चलता रहा।

जब खरगोश की आँख खुली तो शाम हो चुकी थी। जागते ही खरगोश को ध्यान आया कि वह तो कछुए के साथ दौड़ में हिस्सा ले रहा था और वह तो यहाँ सो रहा है।

वह तुरन्त उठा और भागा। पर जब तक वह तय की हुई जगह पर पहुँचा दूसरे जानवर वहाँ कछुए का स्वागत कर रहे थे और कछुए की जीत पर उसको बधाई दे रहे थे।

यह सब देख कर खरगोश तो शर्म से पानी पानी हो गया।

खरगोश को देर से आते देख कर कुछ जानवर हँस पड़े और कुछ बोले — "अरे खरगोश भाई, कहाँ रह गये थे तुम? तुमने तो आज कमाल ही कर दिया कि तुम तो कछुए से भी हार गये।"

पर खरगोश बेचारा किसी को अपना हाल क्या बताता। वह तो बस अपने आराम को कोस रहा था।

इस तरह दौड़ में धीमे चलने वाला कछुआ जीत गया और तेज़ भागने वाला खरगोश हार गया।

इसलिये किसी भी आदमी को अपना काम खत्म करके ही दम लेना चाहिये और कछुए जैसा आदमी तो धीरे धीरे काम करके भी तेज़ काम करने वाले से जीत सकता है।

10 बातूनी कछुआ

कछुए की एक और कहानी। यह कहानी कछुए के मेहनती होने की कहानी नहीं है बल्कि यह एक ऐसे कछुए की कहानी है जो बहुत बात करता था और इसी ज़्यादा बात करने की वजह से उसको अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

एक बार एक कछुआ था। वह बहुत बात करता था। उसको बात करने का इतना शौक था कि वह किसी से भी कितनी भी देर तक और कहीं भी बात कर सकता था।

एक दिन वह ऐसे ही आसमान की तरफ देख रहा था तो उसने देखा कि बहुत सारी चिड़ियें उड़ी चली जा रही थीं। वह उनको देख कर इतना खुश हुआ कि उसको लगा कि उसको भी आसमान में उड़ना चाहिये।

सो वह एक बड़ी सी चिड़िया के पास गया और अपनी आसमान में उड़ने की इच्छा उसको बतायी। वह चिड़िया बोली "पर तुम्हारे पंख तो हैं ही नहीं तुम उड़ोगे कैसे?"

कछुआ कुछ रुआँसा सा हो कर बोला "चिड़िया रानी बस यही तो परेशानी है। क्या कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिससे मैं आसमान में उड़ सकूँ? मेरा भी आसमान में उड़ने का बहुत मन करता है।"

उसके मन की यह हालत देख कर उस चिड़िया को उस पर दया आ गयी और वह बोली — “अच्छा ठीक है मुझे सोचने का कुछ समय दो मैं अपनी साथी चिड़ियों से सलाह करके तुमको बताती हूँ। शायद वे कोई रास्ता सुझा सकें।” कह कर वह चिड़िया उड़ गयी।

दो दिन बाद वह चिड़िया कछुए को मिली और बोली — “अब तुम आसमान में उड़ सकते हो।”

कछुआ तो यह सुन कर खुशी से उछल पड़ा बोला — “वह कैसे चिड़िया रानी?”

चिड़िया को पता था कि वह कछुआ बहुत बातूनी था सो वह तुरन्त बोली — “अगर तुम अपना मुँह बन्द रखो तो।”

आसमान में उड़ने के लिये कछुआ कुछ भी करने को तैयार था सो वह तुरन्त ही बोला “हाँ हाँ मैं बिल्कुल चुप रहूँगा। एक शब्द भी नहीं बोलूँगा बस तुम मुझे आसमान में ले चलो।”

चिड़िया बोली — “ठीक है। कल तुम आसमान में जाने के लिये तैयार रहना। कल हम दो चिड़ियें यहाँ एक डंडा ले कर आयेंगी। हम दोनों उस डंडे को उसके दोनों सिरों से अपने मुँह में दबा लेंगी।

तुम उस डंडे को बीच में से अपने मुँह में पकड़ लेना। बस हम उस डंडे को ले कर फिर आसमान में उड़ जायेंगे। इस तरह से तुम आसमान में उड़ सकोगे।”

कछुए को यह प्लान पसन्द आया। वह अपने घर चला गया और रात भर आसमान में उड़ने के सपने देखता रहा।

अगले दिन सुबह सुबह ही वह चिड़ियों की बतायी जगह पर पहुँच गया। थोड़ी देर में वे दोनों चिड़ियें भी एक बड़ा सा डंडा ले कर वहाँ आ गयीं।

प्लान के अनुसार दोनों चिड़ियों ने उस डंडे को दोनों तरफ से अपने पंजों में दबा कर पकड़ लिया और कछुए ने उसको बीच में से अपने मुँह से पकड़ लिया।

उड़ने से पहले चिड़ियों ने कछुए को आखिरी चेतावनी दी कि वह इस डंडे को पकड़ने को बाद बिल्कुल चुप रहे एक शब्द भी नहीं बोले। क्योंकि अगर वह बोला तो वह नीचे गिर जायेगा और मर जायेगा।

कछुए ने कहा कि वह समझ गया और वह बिल्कुल भी नहीं बोलेगा। वे चिड़ियें उसको ले कर आसमान में उड़ चलीं।

कछुआ तो पहली बार आसमान में उड़ रहा था सो उसको बड़ा मजा आ रहा था। वह चारों तरफ इधर उधर देखता जा रहा था।

हरे भरे घास के मैदान, बड़े बड़े मकान, लम्बी लम्बी नदियाँ, गहरी गहरी घाटियाँ सब कुछ उसको नया नया और सुन्दर लग रहा था। वह अपने इस नये सफर से बहुत खुश था।

कि तभी एक गाँव आया। उस गांव में एक स्कूल था जहाँ बच्चे खेल रहे थे। चिड़ियों को बच्चे बहुत अच्छे लगते थे सो वे

वहॉ पहुॅच कर थोड़ा सा नीचे उड़ने लगीं। बच्चे भी उन चिड़ियों को देख कर ताली बजाने लगे।

तभी एक बच्चे ने देखा कि दो चिड़ियें एक कछुए को डंडी से लटकाये आसमान में उड़ी जा रही हैं। यह तमाशा उसने दूसरे बच्चों को भी दिखाया तो यह अजीब चीज़ देख कर दूसरे बच्चे भी बहुत खुश हुए और उन्होंने और ज़ोर ज़ोर से तालियॉ बजानी शुरू कर दीं।

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से कहा — "देखो तो ज़रा इस कछुए को देखो। यह कैसा चिड़ियों के साथ ऊपर आसमान में उड़ता जा रहा है। अगर यह अपने आप नहीं उड़ सकता तो फिर यह उड़ता ही क्यों है।"

चिड़ियें क्योंकि नीची उड़ रही थी तो बच्चों की यह बात कछुए ने भी सुन ली।

यह सुन कर उसको गुस्सा आ गया वह उनकी बात का जवाब देने ही वाला था कि "तुम्हें इस बात से क्या मतलब कि मैं कैसे उड़ता हूॅ मैं जो चाहे करूॅ।"

पर जैसे ही कछुए ने यह कहने के लिये अपना मुॅह खोला तो वह यह सब तो नहीं कह पाया बल्कि वह तो धरती पर गिरने लगा और कुछ ही मिनटों में नीचे गिर कर मर गया।

इस तरह बदले की भावना ने उसको बोलने पर मजबूर किया और उसकी जान ले ली।

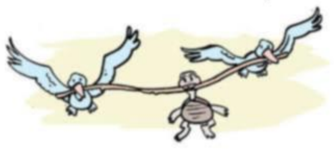

11 दो बिल्लियाँ और बन्दर

यह कहानी मैंने कक्षा 2 या कक्षा 3 की हिन्दी की पुस्तक में पढ़ी थी। यह कहानी यह बताती है कि आपस की लड़ाई को आपस में ही सिलटा लेना चाहिये।

उसको सिलटाने के लिये किसी तीसरे के पास नहीं जाना चाहिये। क्योंकि तीसरा उनकी लड़ाई का फायदा उठाता है और फिर उन दोनों को कुछ नहीं मिलता।

एक बार दो बिल्लियों को कहीं से एक रोटी मिल गयी। दोनों बिल्लियाँ उस रोटी पर लड़ने लगीं। एक बोली यह रोटी मेरी है दूसरी बोली यह रोटी मेरी है। एक ने कहा कि "यह रोटी पहले मैंने देखी है।" दूसरी बोली "नहीं यह रोटी पहले मैंने देखी है।"

इस पर यह तय हुआ कि रोटी आधी आधी बाँट ली जाये। पर बँटवारा कौन करे?

एक बिल्ली बोली – "ऐसे तो हम लोग लड़ते ही रहेंगे चलो किसी जज से चल कर इस रोटी का बँटवारा करवाते हैं।" सो उन्होंने एक जज ढूँढना शुरू किया।

चलते चलते उनको एक बन्दर मिल गया। उन्होंने बन्दर से प्रार्थना की कि वह उनका जज बन जाये और उस रोटी के बँटवारे में उनकी सहायता करे।

बन्दर उनकी सहायता करने को राजी हो गया।

बन्दर बोला — "ऐसे तो मैं रोटी के बराबर बराबर टुकड़े कर नहीं सकता इसलिये तुम लोग यहीं रुको मैं अपने घर से तराज़ू ले कर आता हूँ। फिर उससे तौल कर हम रोटी के बराबर बराबर हिस्से कर लेंगे।"

यह कह कर बन्दर तुरन्त पेड़ पर चढ़ गया और एक छोटी सी तराज़ू ले कर तुरन्त ही नीचे आ गया।

अब उसने रोटी के दो टुकड़े किये और दोनों टुकड़े तराज़ू के दोनों पलड़ों पर रख दिये। उसने देखा कि तराज़ू का एक पलड़ा भारी है और दूसरा हलका।

सो उसने भारी वाले पलड़े की रोटी में से थोड़ा सा टुकड़ा तोड़ा और तोड़ कर कर खा लिया।

पर फिर उसने देखा कि अब उसकी तराज़ू का दूसरा पलड़ा भारी हो गया है। सो उसने दोनों पलड़े बराबर करने के लिये फिर भारी वाले पलड़े की रोटी में से एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ा और खा लिया।

इस तरह वह दोनों पलड़े बराबर करने के चक्कर में हर भारी वाले पलड़े से रोटी का एक एक टुकडा़ तोड़ तोड़ कर खाता रहा जब तक कि एक पलड़े की रोटी बिल्कुल ही खत्म नहीं हो गयी।

बिल्लियाँ उसके पास बैठी यह तमाशा देखती रहीं।

पहले तो उनके मन में बन्दर के लिये बड़ा विश्वास था कि बन्दर तराजू की सहायता से उनकी रोटी के टुकड़े ठीक से बराबर बराबर कर देगा।

पर जब वह तराजू के हर भारी पलड़े की रोटी में से रोटी के टुकड़े खाने लगा और एक पलड़े में से उनकी रोटी बिल्कुल ही खत्म हो गयी तो उनको डर लगने लगा।

पर अब क्या हो सकता था अब तो वे बन्दर को अपना जज बना चुकी थीं और बन्दर भी उनकी करीब करीब सारी रोटी हड़प कर चुका था।

जब एक पलड़े में केवल एक छोटा सा रोटी का टुकड़ा रह गया तो बिल्लियों ने कहा कि वह टुकड़ा उनको दे दिया जाये वे उसी रोटी के टुकड़े से अपना काम चला लेंगीं।

इस पर बन्दर बोला — "यह टुकड़ा मैं तुम लोगों को कैसे दे सकता हूँ यह तो इस बॅटवारा करने की मेरी मजदूरी है।"

और यह कह कर वह बन्दर वह बची हुई रोटी का टुकड़ा भी खा गया। रोटी खा कर और अपनी तराजू ले कर वह कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया।

बिल्लियॉ बेचारी एक दूसरे का मुँह देखती रह गयीं।

किसी ने ठीक ही कहा है कि दूसरों से अपनी चीज़ों का बॅटवारा नहीं करवाना चाहिये।

12 टिड्डा और चींटी

यह कहानी हमने कक्षा 4 की पुस्तक में पढ़ी थी। यह कहानी हमें यह बताती है कि लोगों को केवल उसी समय का ही ख्याल नहीं रखना चाहिये बल्कि अपने आगे के समय की भी चिन्ता करनी चाहिये।

हर समय आराम करना और आज के काम को कल पर टाल देना कोई अक्लमन्दी का काम नहीं है।

एक बार एक टिड्डे ने सारी गरमी गाते नाचते निकाल दीं। वह लम्बी लम्बी घास में बैठ जाता और अपने प्रिय गाने गाता रहता।

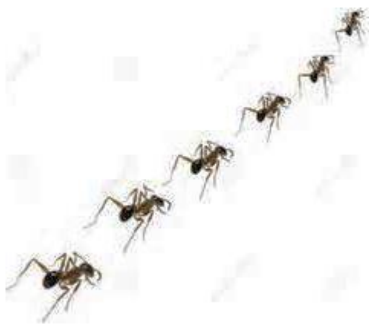

एक दिन उसने छोटी छोटी चींटियों की एक लाइन जाती देखी। हर चींटी अपनी अपनी पीठ पर चावल के दाने उठा कर ले जा रही थी।

वह हँस कर उनसे बोला — "ओ चींटियों, तुम इतनी मेहनत क्यों कर रही हो? अपना बोझा रख दो और मेरे पास आ कर थोड़ी सी धूप खा लो।"

चींटियों ने ना में सिर हिलाया और उस कड़ी गरमी में भी अपना सफर जारी रखा।

वे बोलीं — "हम अपना काम नहीं रोक सकते टिड्डे भाई। हमको इस समय जाड़ों के लिये अपना खाना इकट्ठा करना है ताकि हम जाड़ों में भूखे न मरें।"

टिड्डा बोला — "तुम कुछ ज़्यादा ही फिक्र करती हो चींटी बहिन। अभी तो जाड़ा आने में बहुत देर है। जब तक मौसम अच्छा है तुमको थोड़ा आराम करना चाहिये।"

चींटियों ने एक दूसरे की तरफ देखा और फिर बोलीं — "तुमको आराम करना हो तो तुम आराम करो टिड्डे भाई। हमको मालूम है कि हमको जाड़ा किस तरह निकालना हैं।"

टिड्डा आराम से बैठा रोज धूप सेकता रहा, धूप में बैठा गाने गाता रहा और चींटियों को खाना ढोते देखता रहा। उसको पता ही नहीं चला कि कब गरमी का मौसम खत्म हो गया, कब पेड़ों की पत्तियाँ पीली पड़ गयीं, कब ठंडी हवाऐं चलने लगीं, कब पेड़ों से पत्ते गिर गये और कब जाड़ा आ गया।

बहुत जल्दी ही टिड्डा ठंड से काँपने लगा और भूखा मरने लगा क्योंकि अब उसको खाना मिलना बहुत मुश्किल हो गया था।

कुछ दिनों में ही बरफ पड़नी शुरू हो गयी और टिड्डे के खाने के सभी रास्ते बन्द हो गये। उसने अपने लिये खाना बहुत ढूँढा पर उसे कहीं खाना ही नहीं मिला।

आखिर वह चींटियों के घर पहुँचा। चींटियों का घर उसको गरम और आरामदेह लगा।

जब उसने उनके घर में अन्दर झॉका तो उसने देखा कि उनके घर में एक तरफ को आग जल रही है जिससे उनका घर गरम हो रहा है। दूसरी तरफ एक मेज पड़ी है और वहॉ बहुत सारी चींटियॉ उस मेज के किनारे बैठी हुई खाना खा रही हैं।

उसी समय टिड्डे ने उनका दरवाजा खटखटाया।

वह बोला — "मुझे बहुत ठंड लग रही है और मुझे भूख भी लग रही है चींटियो। क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ और तुम्हारे साथ थोड़ी सी तुम्हारे घर की गरमी ले सकता हूँ थोड़ा सा खाना खा सकता हूँ?"

एक चींटी ने उसको ध्यान से देखा और बोली — "मैं तुम्हें पहचान गयी। अगर मैं गलत नहीं हूँ तो क्या तुम वही टिड्डे नहीं हो जो हमसे कह रहे थे कि खाना इकट्ठा करने के लिये अभी तो बहुत समय है?"

टिड्डा पछतावे की आवाज में बोला — "हॉ चींटी बहिन मैं वही टिड्डा हूँ। पर मैं गलत था। मैंने अपना सारा समय गाने ओर आराम करने में बिता दिया और अब मेरे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

चींटी बोली — "मुझे लगता है कि तुमने अपनी गलती से सीख ले ली है कि समय पर ही अपने काम कर लेने चाहिये इसलिये तुम हमारे साथ खाना खा सकते हो। पर अगर तुम हमारे साथ खाना

खाना चाहते हो तो तुमको खाने से पहले हमें अपना एक गाना सुनाना पड़ेगा।"

और टिड्डा अन्दर आ गया। उसने सबके लिये गाना गाया, फिर सबने मिल कर खाना खाया।

जाड़ों भर टिड्डा उन चींटियों के साथ आराम से रहा। पर क्या टिड्डे को इससे कोई सीख मिली?

13 एक शेर और एक छोटी चुहिया

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि किसी छोटे आदमी को छोटा समझ कर उसकी बेइज़्ज़ती नही करनी चाहिये। हर एक के अपने अपने गुण होते हैं। उसके उन गुणों को जानने की कोशिश करनी चाहिये और उसके उन गुणों की इज़्ज़त करनी चाहिये।

आओ आज पढ़ते हैं एक ऐसी ही कहानी जिसमें एक ताकतवर जानवर एक बहुत छोटे से जानवर को कुछ नहीं समझता पर वही छोटा जानवर बाद में उस बड़े जानवर की जान बचाता है।

एक जंगल में एक शेर रहता था। जैसा कि तुम सभी जानते हो कि शेर तो जंगल का राजा होता है तो उसको तो किसी से डरने की जरूरत ही नहीं होती बल्कि सारे जानवर उससे डरते हैं।

और शेर तो ताकतवर भी बहुत होता है कोई उसके सामने कुछ बोल भी नहीं सकता। सो वह शेर आजादी से उस जंगल में रहता था।

उसी जंगल में और भी जानवर रहते थे। शेर की मॉद के पास एक छोटी सी चुहिया भी रहती थी।

एक दिन वह अपने दोस्तों के साथ खेल रही थी कि उसके सारे दोस्त तो खेल खेल कर अपने अपने घर चले गये पर उसका मन खेलने से नहीं भरा। वह वहॉ देर तक खेलती रही।

उस दिन शेर एक छायादार पेड़ के नीचे आराम से सो रहा था। सो खेलते खेलते वह चुहिया उसी जगह आ निकली जहाँ शेर सो रहा था।

खेलते खेलते वह शेर की पूँछ पर चढ़ गयी और शेर की पूँछ से खेलने लगी। धीरे धीरे वह शेर के मुँह की तरफ बढ़ती रही जब तक वह शेर की मूँछों के पास तक नहीं आ गयी। वहाँ आ कर वह उसकी मूँछों से खेलने लगी।

जब चुहिया शेर की मूँछों से खेलने लगी तो शेर को गुदगुदी हुई तो शेर की आँख खुली। उसको अपने मुँह के आस पास कुछ चलता सा महसूस हुआ सो उसको हटाने के लिये उसने अपना पंजा मारा तो एक बहुत ही छोटी सी चुहिया उसके पंजे में आ गयी।

उस छोटी सी चुहिया को अपनी मूँछों से खेलते देख कर शेर को बहुत गुस्सा आया।

उसने उससे पूछा – "अरी ओ छोटी सी चुहिया, क्या तू जानती है कि तू कहाँ है?"

यह सुन कर वह छोटी चुहिया डर गयी और उसके मुँह से निकला "नहीं"।

शेर बोला – "तू इस समय शेर के पंजे में है जो इस जंगल का राजा है। तू ज़रा सी चुहिया और तेरी यह हिम्मत कि तू जंगल के

राजा के शरीर पर चढ़ कर उसकी मूँछों से खेले? अब तेरी सजा यही है कि मैं तुझे खा जाऊँ।"

चुहिया यह सुन कर गिड़गिड़ाते हुए बोली — "हे जंगल के राजा, आप तो जंगल के राजा हैं। कितने भी बड़े जानवर को मार कर खा सकते हैं। फिर मैं तो एक बहुत ही छोटी सी चुहिया हूँ। मैं तो आपके एक कौर के बराबर भी नहीं हूँ।

आपके सामने मेरी क्या बिसात? आप मेरे ऊपर दया कीजिये और मुझे छोड़ दीजिये। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो शायद मैं किसी दिन आपके काम आ जाऊँ। मेहरबानी करके मुझ पर दया कीजिये और मुझे छोड़ दीजिये।"

यह सुन कर तो शेर और बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "हा हा हा। तुझ जैसी छोटी सी चुहिया मुझ जैसे जंगल के राजा के किस काम आ सकती है।

पर हम तेरी इस बात से बहुत खुश हैं इसलिये हम तुझे छोड़ देते हैं। जा और जा कर खेल। पर आगे से खयाल रखना हमारे आराम में खलल न पड़े।" कह कर शेर ने उसको छोड़ दिया।

चुहिया हँसती खेलती कूदती शेर को धन्यवाद देती वहाँ से अपने घर भाग गयी

पर आदमी तो जंगल के राजा से भी बड़ा होता है। वह तो शेर का भी शिकार करता है। सो एक दिन एक शिकारी उस जंगल में

आ निकला और उसने शेर को पकड़ने के लिये वहाँ जाल बिछाया। जाल बिछा कर वह वहाँ से चला गया।

उस दिन शेर भी इत्तफाक से अपने शिकार के लिये जंगल में इधर उधर घूम रहा था कि वह शिकारी के फैलाये हुए जाल में फँस गया। जब तक वह यह समझे कि क्या हो रहा है तब तक तो वह उस जाल में पूरी तरह से फँस चुका था।

अब वह वहाँ बैठे बैठे तो कुछ कर नहीं सकता था सो उसने दहाड़ना शुरू किया।

शेर की दहाड़ तो दूर दूर तक जाती है। यह दहाड़ उस छोटी सी चुहिया ने भी सुनी जिसको इस शेर ने मारने से छोड़ दिया था।

चुहिया फौरन ही पहचान गयी कि यह तो जंगल के राजा की आवाज है। उसको शेर की दहाड़ से लगा कि वह किसी मुसीबत में है और उसको सहायता चाहिये।

बस वह तुरन्त वहाँ से भाग ली और उसी तरफ चल दी जिस तरफ से वह दहाड़ आ रही थी।

जल्दी ही वह उस जगह आ गयी जहाँ शेर जाल में फँसा पड़ा था। उसने आ कर देखा तो शेर को आदमी के बने जाल में फँसा पाया।

वह बोली — "शेर जी शेर जी, आप बिल्कुल भी चिन्ता मत कीजिये। मेरे दाँत बहुत तेज़ हैं। मैं अभी आपका यह जाल अपने दाँतों से मिनटों में काट देती हूँ।"

इतना कह कर वह चुहिया अपने तेज दाँतों से शेर का जाल काटने में लग गयी। कुछ ही देर में चुहिया ने वह जाल काट दिया और शेर जाल से बाहर निकल आया और आजाद हो कर जंगल में भाग गया।

तो बच्चों इस तरह एक छोटी सी चुहिया ने जंगल के ताकतवर राजा शेर की जान बचायी। इसके बाद अपनी जान बचाने के बदले में शेर ने चुहिया को अपने आस पास खेलने की इजाज़त दे दी।

चुहिया ने पूछा — "क्या मैं आपकी मूँछों से भी खेल सकती हूँ?"

शेर हँसा और बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम कभी भी आ सकती हो और मेरी किसी भी चीज़ से खेल सकती हो चुहिया रानी।"

चुहिया उछलती कूदती भाग गयी। अब वह कभी भी शेर के पास आ जाती और कभी उसके बालों से खेलती तो कभी पूँछ से तो कभी मूँछ से। और शेर आराम से सोता रहता। उसे चुहिया से कोई परेशानी नहीं थी बल्कि अब उसको उसके ऊपर पूरा विश्वास था।

छोटी से छोटी चीज़ भी कभी कभी बहुत बड़ा काम कर जाती है इसलिये उसे छोटा समझ कर बेकार नहीं समझना चाहिये। उसका भी आदर करना चाहिये।

दूसरे किसी के किये गये उपकार को भी कभी भूलना नहीं चाहिये। अगर हो सकता है तो उसका बदला जरूर चुकाना

चाहिये। इस कहानी में शेर और चुहिया दोनों ही ने एक दूसरे के उपकार को नहीं भुलाया।

चुहिया ने अपनी जान बख़्शने के बदले में शेर की जान बचायी और शेर ने चुहिया को अपनी जान बख़्शने के बदले में अपने ऊपर खेलने की इजाज़त दी।

14 एक लड़का और कुल्हाड़ी

लालच की एक कहानी "कुत्ता और माँस का टुकड़ा" हम पहले ही इस पुस्तक में पढ़ चुके हैं। यह कहानी भी कुछ वैसी ही कहानी है।

यह एक लालची लकड़हारे की बहुत पुरानी कहानी है जो अधिकतर माँ बाप अपने बच्चों को इसलिये सुनाते हैं ताकि वे लालच न करें।

इस कहानी में भी लालच की वजह से लकड़हारे को जो वह चाहता है वह तो मिलता ही नहीं बल्कि उसकी अपनी चीज़ भी खो जाती है।

एक लड़का रोज अपनी कुल्हाड़ी ले कर एक जंगल में लकड़ी काटने जाता था। उसका पिता वह लकड़ी बाजार में बेच कर अपना और अपने परिवार का गुजारा करता था।

एक दिन वह लड़का एक नदी के पास लकड़ी काट रहा था कि उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गयी। पेड़ अभी आधा ही कटा था और उसके पास एक ही कुल्हाड़ी थी।

उसको तैरना भी नहीं आता था सो वह वहीं नदी के किनारे बैठ गया और रोने लगा और भगवान से प्रार्थना करने लगा कि वह किसी तरह उसकी कुल्हाड़ी निकाल दे।

भगवान को उसके ऊपर दया आ गयी और यकायक वह नदी में से एक सोने की कुल्हाड़ी लिये हुए प्रगट हुए।

उन्होंने उस लड़के से पूछा — "बेटे क्या यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है?"

लड़के ने उदास चेहरे से जवाब दिया "नहीं"।

भगवान ने एक डुबकी लगायी और अबकी बार वह एक चाँदी की कुल्हाड़ी ले कर बाहर निकले।

उस कुल्हाड़ी को उसे दिखा कर उन्होंने उससे फिर पूछा — "क्या यह है तुम्हारी कुल्हाड़ी?"

लड़के ने फिर उदास चेहरे से जवाब दिया "नहीं"।

भगवान ने एक डुबकी और लगायी और अबकी बार वह एक लोहे की कुल्हाड़ी ले कर निकले। उन्होंने उससे फिर पूछा — "क्या यह है तुम्हारी कुल्हाड़ी?"

उस कुल्हाड़ी को देख कर उस लड़के का चेहरा खुशी से खिल गया। वह बोला — "हाँ यही है मेरी कुल्हाड़ी। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।"

भगवान उसकी सच्चाई और नम्रता से बहुत खुश हुए। उन्होंने तीनों कुल्हाड़ियाँ उस लड़के को दे दीं और वहाँ से गायब हो गये।

लड़के ने बाकी बचा पेड़ काटा और लकड़ियाँ ले कर घर वापस आ गया। घर आ कर उसने अपनी कुल्हाड़ी खोने और पाने की कहानी अपनी माँ को बतायी।

मॉ ने वे सोने और चॉदी की कुल्हाड़ियॉ बेच दीं। उसके पैसे से अब वे लोग बहुत अमीर हो गये पर फिर भी उन्होंने अपना लकड़ी काटने का काम नहीं छोड़ा।

उसी गॉव में एक और लकड़हारा भी रहता था। वह बहुत लालची था और दूसरों से जलता था। उसकी पत्नी उससे भी ज़्यादा लालची और जलने वाली थी।

जब उन्होंने अपने पड़ोसी को रातों रात अमीर होते देखा तो वह जलन से भर गया और तुरन्त ही उसके जा घर पहुॅचा। उसने उससे उसके अमीर होने की तरकीब पूछी तो उसके लड़के ने उसको सब कुछ सच सच बता दिया।

अब क्या था अगले दिन वह भी उसी जगह लकड़ी काटने पहुॅच गया।

काफी देर के बाद भी जब उसकी कुल्हाड़ी उसके हाथ से फिसल कर नदी में नहीं गिरी तो उसने उसे जान बूझ कर नदी में गिरा दिया और उस कुल्हाड़ी को निकालने के लिये किनारे पर बैठ कर रोने और भगवान से प्रार्थना करने लगा कि वह उसकी कुल्हाड़ी उस नदी में से निकाल दें।

भगवान ने उसकी प्रार्थना भी सुनी और नदी में से एक लोहे की कुल्हाड़ी निकाल कर उससे पूछा — “क्या यही है तुम्हारी कुल्हाड़ी?”

अब लकड़हारे को तो सोने की कुल्हाड़ी चाहिये थी सो उसने कहा "नहीं नहीं, यह नहीं है मेरी कुल्हाड़ी।"

भगवान ने दोबारा नदी में डुबकी लगायी और अबकी बार वह एक चाँदी की कुल्हाड़ी ले कर प्रगट हुए।

उस कुल्हाड़ी को उसे दिखाते हुए उन्होंने उससे पूछा — "क्या यह है तुम्हारी कुल्हाड़ी?"

पर लकड़हारे को तो सोने की कुल्हाड़ी चाहिये थी सो उसने उस कुल्हाड़ी को भी मना कर दिया कि वह उसकी कुल्हाड़ी नहीं थी।

भगवान ने तीसरी बार नदी में डुबकी लगायी और अबकी बार वह एक सोने की कुल्हाड़ी ले कर प्रगट हुए। उस कुल्हाड़ी को उसे दिखाते हुए उन्होंने पूछा — "क्या यह है तुम्हारी कुल्हाड़ी?"

लकड़हारे को तो यही कुल्हाड़ी चाहिये थी सो उस कुल्हाड़ी को देखते ही वह बहुत खुश हो गया और बोला — "हाँ यही है मेरी कुल्हाड़ी।"

कह कर उसने उसको छीनने के लिये अपने दोनों हाथ बढ़ा दिये।

पर भगवान कोई बुद्धू तो थे नहीं, उन्होंने तुरन्त ही अपना हाथ पीछे की तरफ कर लिया और वह लकड़हारा उनसे कुल्हाड़ी नहीं ले सका।

भगवान ने पूछा — "क्या तुम अपनी लकड़ी रोज इसी कुल्हाड़ी से काटते हो?"

अब उसको भगवान से इस सवाल की उम्मीद तो थी नहीं सो वह इस सवाल का जवाब नहीं दे सका।

भगवान उसके झूठों से इतने ज़्यादा नाखुश हुए कि उन्होंने सारी कुल्हाड़ियाँ नदी में फेंक दीं और गायब हो गये।

इस तरह न तो उसने भगवान से मिलने वाली सोने और चाँदी की कुल्हाड़ियाँ खोयीं बल्कि अपनी कुल्हाड़ी जिससे उसकी रोजी रोटी चलती थी वह भी खो दी। सच है लालच बुरी बला है।

15 एक लड़का और भेड़िया

बच्चों यह कहानी बहुत मजेदार है। बच्चों को यह कहानी उनके माता पिता इसलिये सुनाते हैं ताकि वे झूठ न बोलें और झूठ बोल कर दूसरों को परेशान न करें क्योंकि इससे उनकी अपनी बात की इज़्ज़त चली जाती है।

दूसरे लोग उनका विश्वास करना छोड़ देते हैं और जब दूसरों का विश्वास चला जाता है तो कोई उनकी बात सुनता नहीं है और इस तरह उनकी जरूरत के समय कोई काम नहीं आता।

एक गाँव में एक लड़का अपने माता पिता के साथ रहता था। वह बहुत जल्दी ही ऐसे कामों से थक जाता था जो उसको करने के लिये दिये जाते थे पर उसको हमेशा ही कुछ न कुछ ऐसा करने में बड़ा मजा आता था जिससे दूसरे लोग परेशान हों क्योंकि इससे उसका मन बहलता था।

एक दिन उसके माता पिता ने उसको भेड़ों के झुंड की देखभाल करने लिये एक पहाड़ी पर भेजा।

उसकी माँ ने कहा — "बेटे देखो ये भेड़ चराने के लिये पहाड़ी पर ले जाओ। एक जगह आराम से बैठ जाना और भेड़ों को देखते रहना। पहाड़ी की ताजा हवा तुमको अच्छी लगेगी और अगर तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो जाये तो हमें पुकार लेना।"

सो वह लड़का भेड़ों को ले कर पहाड़ी पर चला गया और भेड़ों को चरने के लिये छोड़ दिया। वह खुद एक पेड़ के नीचे ठंडी ठंडी हवा खाने बैठ गया। वहाँ सब कुछ बहुत अच्छा था सो वह बिल्कुल भी बोर नहीं हो रहा था।

पर जैसी कि उसकी आदत थी कुछ देर बाद ही वह वहाँ बोर होने लगा और उसके दिमाग में शरारत घूमने लगी।

वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "भेड़िया आया भेड़िया आया। मेरी सहायता करो, मेरी सहायता करो। एक भेड़िया मेरी भेड़ें खाने आ रहा है, मेरी सहायता करो।"

उसने देखा कि कुछ ही देर में गाँव के बहुत सारे आदमी पहाड़ी के ऊपर उसकी तरफ भेड़िये को मारने के लिये चले आ रहे हैं।

वे जब उस लड़के के पास हाँफते हुए पहुँचे तो उन्होंने उससे पूछा — "कहाँ है भेड़िया?"

लड़का हँसते हुए बोला — "भेड़िया तो यहाँ नहीं है। मैंने तो केवल मजाक किया था।"

गाँव वाले कुछ बोले तो नहीं पर उनको उसका यह मजाक अच्छा नहीं लगा और वे सब गुस्से से भरे हुए अपने अपने घरों को लौट गये।

दो चार दिन बाद वह लड़का फिर से वहीं भेड़ें चराने गया और थोड़ी ही देर बाद फिर बोर होने लगा सो वह फिर से चिल्लाया —

"भेड़िया आया, भेड़िया आया। मेरी सहायता करो मेरी सहायता करो। एक भेड़िया मेरी भेड़ें खाने आ रहा है, मेरी सहायता करो।"

यह सुन कर वे गाँव वाले बेचारे फिर अपना काम छोड़ कर उस लड़के के पास भागे आये और किसी भेड़िये को पास न देख कर उससे पूछा — "कहाँ है भेड़िया?"

वह लड़का फिर हँसा और बोला — "मैं तो मजाक कर रहा था। भेड़िया तो यहाँ कहीं नहीं है।"

यह सुन कर गाँव वाले फिर से बहुत गुस्सा हुए और अपने अपने घरों को वापस चले गये। दो चार दिन बाद वह लड़का फिर से वहीं अपनी भेड़ें चराने आया।

पर उस दिन सचमुच में ही कुछ देर बाद ही उस लड़के को अचानक एक भेड़िया पेड़ों के बीच से आता दिखायी दे गया।

भेड़िये को देखते ही उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गयी और उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी।

वह सहायता के लिये जितनी ज़ोर से चिल्ला सकता था चिल्लाया — "भेड़िया आया, भेड़िया आया। मेरी सहायता करो मेरी सहायता करो। एक भेड़िया मेरी भेड़ें खाने आ रहा है, मेरी सहायता करो।"

पर अबकी बार उसकी सहायता के लिये कोई नहीं आया। सब अपने अपने घरों में बन्द बैठे रहे क्योंकि उन्होंने सोचा कि वह

लड़का उनसे वैसे ही मजाक कर रहा होगा जैसे इसने पहले किया था इसलिये वहाँ क्या जाना।

भेड़िया और पास आ गया और उस लड़के की कई भेड़ें खा गया। लड़का किसी तरह से उससे बच कर एक पेड़ के पीछे छिप गया।

जब भेड़िया भेड़ खा कर चला गया तब वह उस पेड़ के पीछे से निकला और अपनी बची हुई भेड़ें ले कर घर चला गया।

जब उसके माता पिता को उसकी इस हरकत का पता चला तो उन्होंने उसको बहुत डाँटा और कहा कि यह सब उसके उस मजाक करने का ही फल था कि मुसीबत के समय कोई उसकी सहायता के लिये नहीं आया।

इस तरह का मजाक उसे कभी नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे उसकी अपनी बात का विश्वास खो जाता है।

उसके बाद से उस लड़के ने लोगों के साथ इस तरह का मजाक करना बन्द कर दिया।

16 तीन बेटियॉ

यह कहानी मेरी मॉ की बहुत ही प्रिय कहानी थी। वह यह कहानी हमको इसलिये सुनाया करती थीं क्योंकि वह चाहती थीं कि हम भी इस कहानी की सबसे छोटी बेटी की तरह बने।

इसका दूसरी सीख यह भी थी कि सबकी अपनी अपनी किस्मत होती है जिसको उसे बिना किसी शिकायत के स्वीकार कर लेना चाहिये और खराब से खराब परिस्थितियों में भी उन खराब परिस्थितियों का हिम्मत से सामना करना चाहिये। उनसे कभी घबराना नहीं चाहिये।

एक राजा था जिसके बहुत प्यारी प्यारी तीन बेटियॉ थीं। एक दिन उसने अपनी तीनों बेटियों को बुलाया और उनसे पूछा — "मेरी प्यारी बेटियों यह तो बताओ कि तुम लोग किसकी किस्मत का खाती हो?"

राजा अपने पैसे के घमंड में डूबा हुआ था तो वह अपनी तीनों बेटियों से यह सुनना चाहता था कि उसकी बेटियॉ उसी का दिया खाती थीं।

तो पहली दो बड़ी बेटियों ने तो उससे यही कहा कि वे अपने पिता का दिया खाती थीं पर जब उसने अपनी सबसे छोटी बेटी से

यही सवाल पूछा तो वह बोली — "पिता जी मैं अपनी किस्मत का दिया खाती हूँ।"

यह सुन कर राजा बहुत नाराज हुआ। वह बोला — "अगर तू अपनी किस्मत का खाती है तो तू आज और अभी मेरे घर से निकल जा और फिर मुझे कभी अपनी शक्ल नहीं दिखाना फिर मैं देखता हूँ कि तुझे कौन खाना खिलाता है।

पर इससे पहले कि मैं तुझे अपने घर से बाहर निकालूँ तू अभी भी मान जा कि तू मेरा दिया खाती है। तू आराम से रहेगी।"

पर सबसे छोटी बेटी बोली — "नहीं पिता जी। मैं अपनी किस्मत का ही खाती हूँ। पिता जी सब लोग अपनी अपनी किस्मत का ही खाते हैं कोई आदमी किसी दूसरे की किस्मत का खा ही नहीं सकता। आप भी अपनी ही किस्मत का दिया खाते हैं।"

उसकी बड़ी बहिनें उसको बहुत प्यार करती थीं। उन्होंने भी उसको समझाने की बहुत कोशिश की कि वह पिता जी से यह कह दे कि वह उनकी किस्मत का खाती थी तो वह राजमहल में सुखी रहेगी पर वह नहीं मानी और अपनी बात पर अड़ी रही।

उधर राजा भी नहीं माना। अगले दिन उसने उसकी शादी एक गरीब लकड़हारे से कर दी और उसको घर से बाहर निकाल दिया। वह बेचारी उस गरीब लकड़हारे से शादी करके उसके साथ उसके घर चली गयी।

राजा ने अपनी दोनों बड़ी बेटियों की शादी बड़ी धूमधाम से राजकुमारों से कर दी और वे दूसरे राज्य चली गयीं। कुछ समय बाद बड़ी राजकुमारी के राज्य पर किसी दुश्मन राजा ने हमला कर दिया तो उसका राज्य चला गया और वह गरीब हो गयी।

दूसरी राजकुमारी के घर में से भी धीरे धीरे पैसा कम होता गया और उसके घर में भी खाने के लाले पड़ गये।

अब हम उस सबसे छोटी राजकुमारी के घर चलते हैं जो अपनी किस्मत का खाती थी और देखते हैं कि उसके साथ क्या हुआ। उसको खाना मिला कि नहीं।

लकड़हारा अपनी राजकुमारी पत्नी को ले कर अपनी झोंपड़ी में आया और अपनी पत्नी से बोला — "यही मेरा घर है पर आज से यह घर तुम्हारा है।"

राजकुमारी के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। उसने अपने राजकुमारियों वाले कपड़े उतार कर एक पोटली में बाँध दिये और लकड़हारे की दी हुई सूती धोती पहन कर उस झोंपड़ी की साफ सफाई में लग गयी।

उसकी झोंपड़ी साफ करके वह नहायी धोयी और चूल्हा जला कर लकड़हारे के लिये खाना बनाया। खाना बना कर दोनों ने साथ साथ मिल कर खाना खाया और फिर से घर साफ करके वे दोनों सोने चले गये।

अब रोज ऐसा ही होता कि लकड़हारा तो सुबह सुबह लकड़ी काटने जंगल चला जाता और राजकुमारी घर में रह कर घर को देखती भालती।

शाम को उस लकड़हारे को लकड़ियाँ बेच कर जो पैसे मिलते उनसे वह खाने का सामान खरीदता लाता। राजकुमारी उस सामान से खाना बनाती और खाना खा कर वे दोनों सो जाते।

राजकुमारी इतनी सुघड़ थी कि लकड़हारा जो खाने का सामान खरीद कर लाता वह उसको सारा का सारा इस्तेमाल नहीं करती बल्कि उसमें से अगले दिन के लिये भी कुछ बचा लेती थी।

इससे उसको अगले दिन कम खाने के सामान की जरूरत पड़ती। इससे किसी किसी दिन लकड़हारे का लाया खाने का सामान सारा बच जाता और इस तरह लकड़हारे का पैसा भी।

राजकुमारी कढ़ाई बहुत अच्छी करती थी सो घर में सारा दिन खाली बैठने की बजाय उसने गाँव की लड़कियों को कढ़ाई सिखानी शुरू कर दी। इससे भी उसको कुछ आमदनी होने लगी।

धीरे धीरे अब राजकुमारी के पास पैसे इकट्ठे होने लगे तो उसने अपने पति की सहायता के लिये एक मजदूर रख लिया।

इससे उनके पास पैसा और बढ़ने लगा तो उसके पति ने लकड़ी काटने के लिये अब खुद जंगल जाना बन्द कर दिया और कई मजदूर रख कर उन्हीं से लकड़ी कटवाने लगा।

उसने खुद ने अब कटी लकड़ी की एक दूकान खोल ली। दूकान से उसकी आमदनी अब कई गुना बढ़ गयी थी। अब वह जिस गाँव में रहता था उस गाँव के बाहर भी लकड़ियाँ बेचने लगा।

उधर राजकुमारी का कढ़ाई का स्कूल भी बढ़ने लगा।

धीरे धीरे अब वह इतना बड़ा आदमी बन गया था कि उसके पास बहुत बढ़िया मकान भी हो गया था और अब वह गाँव का एक बहुत बड़ा इज़्ज़तदार आदमी भी हो गया था।

जब राजकुमारी को यह लगने लगा कि अब वह अपने पिता को यह बता सकती थी कि सब अपनी किस्मत का ही खाते हैं तब उसने अपने पति को राजा को अपने घर खाना खाने के लिये बुलाने के लिये कहा।

उसका पति राजा को अपने घर बुलाते हुए शरमा रहा था पर जब राजकुमारी ने उससे जिद की तो उसको राजा के घर जाना ही पड़ा। राजा ने भी उसका नाम काफी सुन रखा था सो वह तुरन्त ही उसके घर आने के लिये तैयार हो गया।

उस समय राजा को अपनी सबसे छोटी बेटी की याद आयी। वह सोचने लगा कि उसने अपनी दोनों बड़ी बेटियों की शादी तो राजकुमारों से कर दी थी पर उसकी शादी एक गरीब लकड़हारे से

केवल इसलिये कर दी थी क्योंकि उसने राजा की मन पसन्द बात नहीं कही थी।

वह कहाँ होगी कैसी होगी। उसने उसके साथ कितना अन्याय किया यही सोच कर उसकी आँखों से आँसू बह निकले। जिनकी शादी उसने राजकुमारों से की थी वे तो अब बहुत गरीब हो गयी थीं। इस बात का भी उसको कम दुख नहीं था।

नियत समय पर राजा लकड़हारे के घर आया। राजकुमारी ने राजा की पसन्द का खाना बनाया था। जब राजा ने वह खाना खाया तो उसको अपनी सबसे छोटी बेटी की याद और ज़्यादा आ गयी और उसकी आँखों से आँसू की एक बूँद गिर पड़ी।

लकड़हारा राजा की आँखों में आँसू देख कर बहुत दुखी हुआ। उसने पूछा — "राजा साहब आप क्यों रोते हैं?"

राजा बोला — "मेरी एक बेटी थी जिसकी शादी मैंने एक गरीब लकड़हारे से केवल इसलिये कर दी थी क्योंकि उसने मेरी इच्छानुसार मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया था।"

लकड़हारे ने पूछा — "और वह सवाल क्या था राजा साहब?"

राजा दुखी हो कर बोला — "मैंने अपनी तीनों बेटियों से एक ही सवाल पूछा था कि "तुम किसकी किस्मत का खाती हो।" तो मेरी दो बड़ी बेटियों ने तो कहा कि "पिता जी हम आपकी किस्मत का खाते है।"

मैं यह जवाब सुन कर खुश हो गया तो मैंने उनकी शादी राज घरानों में कर दी पर मेरी सबसे छोटी बेटी बोली कि "मैं तो अपनी किस्मत का खाती हूँ।"

यह सुन कर मुझे बहुत गुस्सा आ गया और मैंने उसकी शादी एक गरीब लकड़हारे से कर दी।

बाद में मुझे बहुत दुख हुआ कि मैंने ऐसा क्यों किया पर उस समय मैं कुछ नहीं कर सकता था। तबसे मैं उसे ढूँढ रहा हूँ पर वह मुझे मिली ही नहीं।

आज यह खाना खा कर मुझे उसकी याद आ गयी। वह बिल्कुल ऐसा ही खाना बनाती थी। पता नहीं वह अब कहाँ होगी किस हाल में होगी।"

कह कर राजा फिर रो पड़ा।

लकड़हारा राजा के पैर छू कर बोला — "राजा साहब आप रोइये नहीं। आपकी वह बेटी बिल्कुल ठीक है। उसने आपसे ठीक ही कहा था। सब अपनी किस्मत का ही खाते हैं।

मैं ही वह खुशनसीब लकड़हारा हूँ जिसके साथ आपने अपनी उस बेटी की शादी की थी। उसी ने आपको आज यहाँ खाना खाने के लिये बुलाया है।"

यह सुन कर राजा की बेटी अन्दर से निकल कर आयी और पिता के पैर छू कर प्रणाम किया। पिता उसको देखते ही फूट फूट कर रो पड़ा और उसे गले से लगा लिया।

दोनों कब के बिछड़े मिल गये। राजकुमारी ने अपनी बहिनों के बारे में पूछा तो राजा ने उसको बताया कि उनके साथ क्या हुआ था।

वह सब सुन कर राजकुमारी को बहुत दुख हुआ। पर राजा उसको देख कर बहुत खुश था।

17 बॅदरिया दुलहनियॉ

यह कहानी भी हमारी मॉ हमें सुनाया करती थीं। यह एक बहुत ही प्यारी कहानी है।

एक राजा था उसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे बहुत लायक थे तो वह सोच नहीं पा रहा था कि वह उनकी शादी कैसे करे।

फिर उसके दिमाग में एक बात आयी और उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे बच्चों अब तुम शादी लायक हो गये हो। अब तुमको शादी कर लेनी चाहिये।

तुम लोग ऐसा करो कि तुम तीनों अपने अपने तीर कमान लो और तीर फेंको। जिसका तीर जहॉ जा कर पड़ेगा उसी लड़की से उसकी शादी होगी।"

यह सुन कर तीनों एक मैदान में पहॅुचे और अपनी अपनी इच्छा अनुसार अपने अपने तीर चला दिये। बड़े राजकुमार का तीर एक राज्य में जा कर पड़ा तो उसकी शादी उस राज्य की राजकुमारी से कर दी गयी।

दूसरे राजकुमार का तीर भी एक राज्य में जा कर पड़ा सो उसकी शादी भी उस राज्य की राजकुमारी से कर दी गयी।

तीसरे राजकुमार ने भी अपना तीर चलाया तो वह अपना तीर ढूँढने निकला तो उसको तो अपना तीर कहीं मिला ही नहीं। वह बेचारा परेशान सा इधर से उधर घूमता रहा।

तभी उसको एक आवाज सुनायी पड़ी — "ओ राजकुमार तुम क्या ढूँढ रहे हो?"

राजकुमार ने इधर उधर देखा तो उसको वहाँ कोई दिखायी नहीं पड़ा पर आवाज तो उसने सुनी थी सो उसने फिर से इधर उधर देखा।

उसको फिर से एक आवाज सुनायी पड़ी — "राजकुमार, इधर देखो इस पेड़ के ऊपर।"

राजकुमार ने पेड़ के ऊपर देखा तो वहाँ उसको एक बँदरिया दिखायी दी। वह बँदरिया फिर बोली — "तुम अपना तीर ढूँढ रहे हो न। यह लो अपना तीर।"

यह देख कर राजकुमार तो यह सोच कर ही बहुत दुखी और गुस्सा हो गया कि अब उसको इस बँदरिया से शादी करनी पड़ेगी।

पर प्रगट में वह बोला — "पर तुमने मेरा यह तीर क्यों पकड़ा? यह तीर तो हमारे पिता ने हमारी दुलहिनें चुनने के लिये छुड़वाया था। अब तुमने इसे बीच में ही पकड़ लिया है तो मुझे अब तुमसे शादी करनी पड़ेगी।"

"तो क्या हुआ। कर लो न तुम मुझसे शादी।"

"क्या? मैं एक बँदरिया से शादी कर लूँ? राजकुमार हो कर एक बँदरिया से शादी? नहीं नहीं यह नहीं हो सकता।"

बँदरिया मुस्कुरायी और बोली — "पर अब तो यह हो कर ही रहेगा क्योंकि अब तुम्हारा तीर मेरे पास है न।" कह कर वह पेड़ पर से कूद कर राजकुमार के कन्धे पर बैठ गयी।

अब क्या था राजकुमार को उस बँदरिया को ही अपने पिता के पास ले जाना पड़ा। राजा को उसे देख कर हँसी आ गयी पर स्थिति को देखते हुए उसने अपने सबसे छोटे राजकुमार की शादी फिर उसी बँदरिया से कर दी।

पर वह भी अपने इस राजकुमार के बारे में कुछ परेशान सा रहा।

कुछ समय बाद उसने अपनी तीनों बहुओं का इम्तिहान लेने की सोची। सो उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मैं देखना चाहता हूँ कि मेरी कौन सी बहू सबसे अच्छी सिलाई करती है सो तुम लोग अपनी अपनी बहुओं से कहो कि वे मेरे लिये एक कमीज बनायें।"

उसके बड़े बेटों को तो कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि उनकी पत्नियाँ तो सिलाई जानती थीं वे कमीज सिल सकती थीं पर वे सभी अपने सबसे छोटे भाई के बारे में सोच सोच कर बहुत परेशान हो रहे

थे कि वह बेचारा यह सब कैसे करेगा क्योंकि उसकी पत्नी तो एक बँदरिया थी। वह कमीज कैसे सिलेगी।

पर राजा का हुकुम तो राजा का हुकुम था उसका पालन तो सबको करना ही था सो सबने अपने अपने घर जा कर अपनी अपनी पत्नियों को राजा का हुकुम सुनाया। दोनों बड़ी बहुऐं तो सुनते ही अपने काम पर लग गयीं।

पर जब छोटा राजकुमार अपनी बँदरिया के पास पहुँचा तो वह बहुत उदास था। बँदरिया ने उससे पूछा कि वह क्यों उदास था तो उसने उसको राजा का हुकुम सुना दिया।

बँदरिया मुस्कुरा कर बोली — "अरे तो इसमें इतना सोचने की क्या बात है तुम हाथ मुँह धो कर खाना खाओ पिता जी को उनकी कमीज मिल जायेगी।"

राजकुमार यह सुन कर कुछ सोच में पड़ गया कि यह बँदरिया उसके पिता की कमीज कैसे सिलेगी पर क्योंकि उसके पास और कोई चारा नहीं था सो वह मुँह हाथ धो कर खाना खाने बैठ गया।

जब कमीज देने का समय आया तो तीनों राजकुमार अपनी अपनी पत्नियों के हाथों की बनी कमीज ले कर राजा के पास पहुँचे।

सबकी निगाह छोटे राजकुमार के हाथों पर लगी थीं कि वह अपने हाथ के पैकेट में से क्या निकालेगा।

पर आश्चर्य जब उसने अपना पैकेट खोला तो उसमें से तो एक बहुत ही सुन्दर राजा के पहनने के लायक कमीज निकली। छोटा राजकुमार खुद भी उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि यह सब कैसे हो गया। पर वह कमीज तो वहाँ थी।

राजा उस कमीज को देख कर बहुत खुश हुआ।

अब राजा ने उन सबको एक दूसरा काम दिया। उसने कहा कि वे सब अपनी अपनी बहुओं से एक एक मेजपोश कढ़वा कर लायें।

राजा का हुकुम। सब बहुओं ने मेजपोश काढ़ना शुरू कर दिया।

छोटा राजकुमार जब घर पहुँचा तो वह फिर से बहुत उदास था। बॅदरिया के फिर से पूछने पर कि वह क्यों उदास था उसने बताया कि राजा ने इस बार सबको एक एक मेजपोश काढ़ने के लिये कहा है।

बॅदरिया बोली — "तो इसमें इतना उदास होने की क्या बात है? आओ पहले खाना खा लो।"

"यह काम तुम कैसे करोगी?"

"जैसे मैंने कमीज सिली थी वैसे ही यह काम भी हो जायेगा। तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो आओ खाना खा लो।"

राजकुमार के पास फिर कोई चारा नहीं था सो वह खाना खाने बैठ गया। पर आज वह उतनी चिन्ता नहीं कर रहा था जितनी कमीज सिलते समय कर रहा था।

समय आने पर बॅदरिया ने उसको अपने हाथ का कढ़ा हुआ मेजपोश राजा को ले जा कर देने के लिये दिया।

जब तीनों राजकुमार अपने अपने मेजपोश राजा को दिखाने लगे तो दोनों बड़े राजकुमार कुछ चिन्ता से अपने छोटे भाई की तरफ देखने लगे। वे उसके लिये वाकई परेशान थे।

पर यह क्या? बॅदरिया के हाथ का कढ़ा हुआ मेजपोश तो बहुत ही सुन्दर और बड़ी बारीक कढ़ाई का कढ़ा हुआ था। सभी ने उसकी कढ़ाई देख कर दॉतों तले ॲगली दबा ली।

राजा उस मेजपोश को देख कर बहुत खुश हुआ। अब उसने तीसरा और आखिरी इम्तिहान रखा। वह यह देखना चाहता था कि उसकी कौन सी बहू सबसे अच्छा खाना बनाती थी।

उसने दिन निश्चित कर दिये कि फलॉ फलॉ दिन वह अपने बेटों के घर खाना खाने आयेगा। राजा का हुकुम।

नियत दिन राजा अपने बेटों के घर खाना खाने पहॅुचा। दोनों बड़े बेटों की बहुओं ने बहुत अच्छा खाना बनाया था। राजा उनके हाथ के बने खाने से बहुत सन्तुष्ट था।

वहाँ से खाना खा कर वह अपने तीसरे बेटे के घर पहुँचा। बँदरिया बहू ने राजा का मन से स्वागत किया और उसको खाना खाने के लिये बिठाया।

राजा के सामने खाना परोसा गया। बहुत सारे खाने बनाये गये थे। राजा तो उनको गिनते गिनते ही थक गया।

इसके अलावा एक बात और भी थी कि जब भी कोई लड़की उसको खाना परोसने आती तो वह हर बार दूसरे कपड़े पहने आती।

इससे राजा को लगा कि जैसे उसके बेटे के एक पत्नी न हो कर कई पत्नियाँ हों। उसने इसकी जाँच करनी चाही। सो एक बार जब एक लड़की उसको खाना परसने आयी तो उसने उसके पैर पर दही की एक छींट डाल दी।

जब दोबारा कोई खाना परसने आयी तो उसने वह दही की छींट उसके पैर पर देखनी चाही।

इत्तफाक से वह उसको वहाँ दिखायी नहीं दी तो उसको विश्वास हो गया कि उसके छोटे बेटे के तो कई पत्नियाँ थीं।

पर राजा वह खाना खा कर बहुत खुश और सन्तुष्ट था।

खाना खाने के बाद राजा ने अपने बेटे से पूछा — "क्या यह सब खाना तुम्हारी उस बँदरिया पत्नी ने ही बनाया है?"

“जी हाँ।”

“और तुम्हारे कितनी पत्नियाँ है?”

“यह कैसा सवाल है पिता जी?”

“बुरा न मानना बेटे। मुझे लगा कि तुम्हारे कई पत्नियाँ हैं क्योंकि जब भी मुझे कोई खाना परोसने आती थी वह हर बार दूसरे कपड़े पहने होती थी। और कोई इतनी जल्दी अपने कपड़े बदल नहीं सकता इसी लिये मैंने पूछा।

“नहीं पिता जी। मेरे एक ही पत्नी है पर वह है बहुत ही होशियार। मैं आपको उससे अभी मिलवाता हूँ।”

इतने में ही उसकी बँदरिया पत्नी एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी के रूप में आ कर खड़ी हो गयी।

राजकुमार ने भी उसको इस रूप में इससे पहले कभी नहीं देखा था तो वह तो उसको देखते ही भौंचक्का रह गया। राजा के भी मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह भी उसको देखता का देखता रह गया था।

बँदरिया ने बताया कि एक परी ने उसे बँदरिया बनने का शाप दिया था और कहा था कि वह इस शाप से तभी छूटेगी जब कोई उससे शादी कर लेगा और फिर वह तीन इम्तिहानों में पास हो जायेगी।

वह राजा की बहुत कृतज्ञ थी कि उसने उसके तीन इम्तिहान लिये और उसको उस परी के शाप से आजाद होने में सहायता की।

आज उसके वे तीन इम्तिहान पूरे हो गये और वह उनमें पास हो गयी सो आज वह अपने उस शाप से छूट गयी। वह इस सबके लिये राजकुमार और राजा की बहुत ही ज़्यादा कृतज्ञ थी।

राजा को भी यह देख कर बहुत खुशी हुई कि उसके तीनों बेटे अपने अपने घर में अब ठीक से रह रहे थे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई 2018